Delhi Postal Regd. No. DL © -01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

भिक्षु वाणी

जीव अजीव अलोख्यां विनां, मिटें नहीं मन रो भर्म। समकत आयां विण जीव ने, रुके नहीं आवतां कर्म।।

जीव अजीव की पहचान हुए बिना मन का भ्रम नहीं मिटता। सम्यक्त्व आए बिना कर्म का निरोध नहीं होता।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 47 • 28 अगस्त - 3 सितम्बर, 2023 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 26-8-2023 • पेज: 12 • ₹10

'संस्था शिरोमणी' तेरापंथी महासभा द्वारा तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन- 2023 का भव्य आयोजन

महासभा है तेरापंथ समाज की सर्वोपरि संस्था : आचार्यश्री महाश्रमण

१३ अगस्त २०२३
नंदनवन मुम्बई

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, युगप्रधान, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी की मंगल सन्निधि एवं तेरापंथ धर्मसंघ की 'संस्था शिरोमणि' जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में १३-१४-१५ अगस्त, २०२३ को नंदनवन, मुंबई (महाराष्ट्र) में त्रिदिवसीय 'तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन' का विराट आयोजन हुआ। १३ अगस्त को प्रात : आचार्य प्रवर के मंगल मुखारविंद से मंगलपाठ का श्रवण कर त्रिदिवसीय सम्मेलन का भव्य शुभारम्भ हुआ। इस सम्मेलन में देश-विदेश की ३६६ सभाओं एवं ३३ उपसभाओं के करीब १४७० प्रतिनिधि पूज्य सन्निधि में उपस्थित रहे। क्षेत्र संख्या और संभागी संख्या की दृष्टि से इस सम्मेलन में अब तक की सर्वाधिक संख्याएं रही।

प्रेरणा सत्र में आचार्यप्रवर ने सहभागी प्रतिनिधियों को अपनी अमृतवाणी से मंगल पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि श्रावक सामान्य गृहस्थ नहीं होता बल्कि वह साधुओं का उपासक होता है। श्रमण की उपासना करने वाला श्रावक होता है। श्रावक की जीवन शैली त्याग, संयम और सादगी से परिपूर्ण होनी चाहिए। जीवन में सदाचार का प्रवास हो। श्रावक को प्रतिदिन नमस्कार महामंत्र का जप करने का प्रयास करना चाहिए। आचार्य प्रवर ने अपने उद्बोधन में कहा कि महासभा के द्वारा अनेक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं, जिनमें ज्ञानशाला प्रमुख है।

ज्ञानशाला भावी पीढ़ी को संस्कारित बनाने का बहुत महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। संस्कार निर्माण शिविर के माध्यम से संस्कारों के संप्रेषण का अच्छा और सशक्त कार्य हो रहा है। इन उपक्रमों के माध्यम से धर्म और संयम की जानकारी बचपन से दी जाती है तो बच्चे जीवन में अनेक बुराइयों से बच सकते हैं। अवस्था के अनुसार श्रावक अपने आप में बदलाव लाने का प्रयास करे और जितना संभव हो सके, समाज, धर्म और आत्म कल्याण का प्रयास करता रहे।

श्रावक अपने जीवन के अंतिम मनोरथ को भी सिद्ध करने का प्रयास करे। ज्ञानशाला व संस्कार निर्माण शिविर बच्चों में अच्छे संस्कार देने वाले उपक्रम है। किशोर मंडल से भी युवा-बच्चों को अच्छे संस्कार मिलते हैं। गुरुदेव तुलसी के समय प्रारंभ हुए यह उपक्रम बड़े उपयोगी हैं। उपासक श्रेणी भी समाज के लिए कितनी उपयोगी है। दूसरों को कितना बताने का, समझाने का कार्य करते हैं। धर्म की साधना कराने में सहयोगी बनते हैं। शनिवार की समायिक में भी श्रावक समाज़ जागृत है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने प्रतिनिधियों को उद्बोधन प्रदान करते हुए तेरापंथ धर्मसंघ की श्रीवृद्धि में श्रावक-श्राविकाओं के योगदान का उल्लेख किया। उन्होंने श्रावक के लिए करणीय और अकरणीय की जानकारी दी। उन्होंने श्रावक के चार प्रकारों का उल्लेख किया - आराधक श्रावक, कार्यकर्त्ता श्रावक, प्रभावक श्रावक और विकास योगी श्रावक। प्रमुखाश्रीजी ने कहा कि श्रावक वह होता है, जिसका आचार शुद्ध होगा, जिसकी देव, गुरु, धर्म के प्रति गहरी श्रद्धा होती है। श्रावक के जीवन में श्रद्धा का प्रकर्ष होना चाहिये।

शुभं भूयात् सत्र में परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर से मंगलपाठ श्रवण करने के उपरांत कार्यक्रम का प्रारंभ सभा गीत से हुआ। तत्पश्चात महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन-२०२२ के शुभारंभ की घोषणा की एवं श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। आचार्यश्री महाश्रमण चतुर्मास व्यवस्था समिति, मुंबई के अध्यक्ष मदनलाल तातेड़, तेरापंथी सभा- मुंबई के कार्याध्यक्ष नवरतन गन्ना, महासभा के पूर्व अध्यक्ष किशनलाल डागलिया ने समागत प्रतिनिधियों के स्वागत में वक्तव्य दिये।

इस सत्र में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित मीरा भायंदर नगरपालिका के पूर्व आमदार नरेन्द्र एल् मेहता ने अपने प्रेरक वक्तव्य में कहा कि जीवन में जनकल्याण के कार्य हों, जिनशासन का कार्य हो, समाज की उपलब्धि बढ़े, समाज आगे बढ़े इसके लिए हमें गुरु चरणों में आकर यहाँ से कुछ न कुछ लेकर जाना चाहिये, यही गुरु के प्रति सच्ची श्रद्धा और भक्ति हो सकती है। महासभा के महामंत्री विनोद बैद ने तेरापंथी सभा प्रतिनिघि सम्मेलन की प्रस्तावना एवं भूमिका प्रस्तुत की।

आध्यात्मिक प्रशिक्षण सत्र में मुनि कुमारश्रमणजी ने 'जैन धर्म महान क्यों' विषय पर प्रभावी प्रशिक्षण प्रदान करते हुए जैन धर्म के सिद्धांत, फिलॉस्फी, मान्यताएं आदि को विस्तृत रूप में परिभाषित करते किया एवं विषय के संदर्भ में समागत प्रतिनिधियों की जिज्ञासाओं का भी सटीक समाधान प्रस्तुत किया।

'सभाओं का सम्यक संचालन' विषय पर आयोजित सत्र में महासभा के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री विश्रुतकुमारजी ने उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा कि यहां जो प्रतिनिधि आये हैं उनमें उत्साह एवं जिज्ञासा का माहौल है। सभी प्रतिनिधि कुछ जानना चाहते हैं, समझना चाहते हैं।

शेष पृष्ठ २ पर

आत्मा को पापों से बचाने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

१६ अगस्त २०२३
नन्दनवन-मुम्बई

हमारी आत्मा को उज्ज्वलता की दिशा में ले जाने वाले आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगलदेशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि परम वन्दनीय भगवान महावीर के सान्निध्य में अनेक लोगों के साथ राजा उदयन रानी मृगावती देवी और श्रमणोपासिका जयंती उपस्थित हुए। भगवान ने देशना दी।

श्राविका जयंती ने भगवान के पास आकर वन्दना की और प्रश्न किया कि भन्ते! जीव भारीपन को कैसे प्राप्त होते हैं। जीव पाप कर्म से भारी किस कारण से बनता है। प्रभु महावीर ने उत्तर में अठारह चीजें बतायी जिनसे जीव गुरुत्व को प्राप्त होता है। यह अठारह चीजें अठारह पाप हैं। आत्मा पापों से भारी है, तो अधोगति में जाने वाली बन सकती है। भारी है, वह नीचे जाती है। हल्की है, वह नीचे नहीं जाती।

हिंसा आदि पापों से आत्मा भारी बनती है। इनका विरमण कर लिया जाए तो आत्मा हल्की बन सकती है। इन अठारह पाप की प्रवृत्तियों को त्याग देने से संयम हो जाता है। साधु के तो सर्व सावद्य योग के त्याग जीवनभर के लिए होते हैं। श्रमणोपासक गृहस्थ भी सामायिक करते हैं, तो एक सीमा तक पाप विरत हो जाते हैं। बारह व्रत और सुमंगल साधना जीवनभर के लिए ले ली तो आंशिक रूप में पापों से विरत हो जाते हैं।

श्रमणोपासिका जयंति द्वारा पूछे गये प्रश्न आगम में आ गये तो कितनी महत्वपूर्ण बात है। भगवान ने उनके उत्तर भी दिये हैं। गृहस्थ गार्हस्थ में रहते हुए सारे पाप से तो नहीं बच सकता है, पर उनकी कुछ सीमा हो जाये तो उसकी आत्मा हल्केपन को प्राप्त हो सकती है।

कई श्रमणोपासक तो एका-भवावतारी हुए हैं। श्रमणोपासक भी कितना विकास कर सकता है। मरुदेवा माता ने तो एक भव मनुष्य का किया और मोक्ष में चली गयी। उससे पहले तो उनका जीव वनस्पति काय में ही रहा था। उन्होंने देवगति, नरकगति और तिर्यन्च गति (वनस्पति सिवाय) का स्पर्श नहीं किया था। हम आत्मा को पापों से बचाने का प्रयास करें।

कालूयशोविलास का विवेचन कराते हुए पूज्यवर ने परम पूज्य कालूगणी की कष्ट सहिष्णुता का उल्लेख कराते हुए भीलवाड़ा से गंगापुर पधारने के प्रसंग को फरमाया।

पूज्यवर ने सुश्री मुस्कान धाकड़ को ३४ की तपस्या, मनीषा चिंडालिया को ३१ की तपस्या एवं लता देवी कटारिया को सिद्धि तप की तपस्या के प्रत्याख्यान करवाये। अन्य तपस्वियों को भी उनकी तपस्या के प्रत्याख्यान करवाये गये।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
28 अगस्त - 03 सितम्बर 2023

अपने शरीर, वाणी, मन और इंद्रियों पर अनुशासन करने वाला व्यक्ति जीवन में विकास कर सकता है।
-आचार्यश्री महाश्रमण

पृथम पृष्ठ का शेष...

उनमें कुछ नया करने की भी भावना है। मुनिश्री ने सभा प्रतिनिधियों को सभाओं के सम्यक संचालन हेतु करणीय कार्यों, उनकी कार्य विधि, रिर्पोटिंग, गति-प्रगति की समीक्षा आदि के विषय में प्रभावी प्रशिक्षण प्रदान किया।

'महासभा-सभा आयाम' विषय पर जिज्ञासा-समाधान सत्र में सोहनराज चोपड़ा ने ज्ञानशाला, सूर्यप्रकाश श्यामसुखा ने उपासक श्रेणी, विकास पुगलिया, विकी सिंघवी, समीर वकील एवं आलोक भंसाली ने तेरापंथ नेटवर्क, हीरालाल मालू, जसराज मालू एवं धर्मेन्द्र चोरड़िया ने तेरापंथ भवन निर्माण परियोजना, पुष्पा बैंगानी ने जैन भारती, संजय खटेड़ ने विज्ञप्ति, कुमुद कच्छारा ने बेटी तेरापंथ की, मर्यादा कुमार कोठारी ने स्मारक सुरक्षा प्रकोष्ठ, सुरेशचन्द गोयल ने आचार्य महाप्रज्ञ समाधि स्थल एवं महाप्रज्ञ दर्शन म्युजियम के संबंध में प्रस्तुतियां दी एवं प्रतिनिधियों द्वारा प्रस्तुत जिज्ञासाओं को समाहित किया। महामंत्री विनोद बैद ने सभाओं के सम्यक संचालन हेतु तेरापंथी सभा संचालन मार्गदर्शिका पुस्तक के विषय में प्रशिक्षण प्रदान किया।

रात्रिकालीन सत्र में 'सभा आपके द्वार- क्यों आवश्यक है' विषय पर महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने वक्तव्य देकर सभाओं को अपने-अपने क्षेत्रों में परिवारों की सार-संभाल हेतु प्रेरित किया। संगठन मंत्री प्रकाश डाकलिया ने सभा आपके द्वार यात्रा के दौरान ध्यान रखने योग्य बिन्दुओं एवं इस अभियान की सफलता के बिन्दुओं पर अपना वक्तव्य दिया। शैलेन्द्र बोरड़ एवं राजेश कुमार दुगड़ ने सभा आपके द्वार के अंतर्गत किए गए कार्यों की रिपोर्टिंग की आवश्यकता के संदर्भ में अवगति दी। 'सभाओं में वैधानिक व्यवस्थाएं' विषय पर महासभा के उपाध्यक्ष विजय कुमार चोपड़ा, संजय खटेड़ एवं महामंत्री विनोद बैद ने विस्तृत जानकारी प्रदान की।

रात्रिकालीन प्रशिक्षण सत्र में मुख्यमुनिश्री महावीरकुमारजी ने प्रतिनिधियों को अभिप्रेरित करते हुए कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ प्राप्त करके हम सब सौभाग्य की सराहना करते हैं। महासभा तेरापंथ समाज की संस्था शिरोमणि है। महासभा के द्वारा ज्ञानशाला, उपासक श्रेणी, संस्कार निर्माण शिविर आदि अनेकानेक गतिविधियां संचालित की जा रही है। मुख्यमुनिप्रवर ने उपस्थित प्रतिनिधियों को सम्यगदर्शन के आठ बिंदुओं- निरूशंका, निष्कांक्षा, निर्वि-चिकित्सा, अमूढ़ दृष्टि, उपगूहन, स्थिरीकरण, वात्सल्य और प्रभावना के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

'जिज्ञासाएं प्रतिनिधियों की : समाधान युगप्रधान गुरूवर का' सत्र में परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी स्वयं तीर्थंकर समवसरण में पधारे। प्रतिनिधियों द्वारा लिखित रूप में की गई जिज्ञासाओं का वाचन महासभा के महामंत्री विनोद बैद ने किया और आचार्य प्रवर ने प्रतिनिधियों की जिज्ञासाओं को समाहित किया। अपने आराध्य के श्रीमुख से अपनी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त कर प्रतिनिधि सौभाग्य की अनुभूति कर रहे थे।

द्वितीय दिवस : १४ अगस्त २०२३

त्रिदिवसीय तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन के द्वितीय दिवस के मंचीय कार्यक्रम में शांतिदूत युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने समागत प्रतिनिधियो को संबोध प्रदान करते हुए फरमाया कि सृष्टि में दो प्रकार की व्यवस्थाएं बताई गई हैं। एक व्यवस्था जहां कोई मुखिया नहीं होता, वहां सभी अपने-अपने कार्य स्वतः संपादित करते हैं। दूसरी व्यवस्था होती है जहां परिवार, समाज, संगठन, संस्था अथवा राष्ट्र का कोई न कोई मुखिया होता है। कोई विधान, संविधान, मर्यादा, व्यवस्था, नियम आदि होते हैं, जिसके माध्यम से व्यवस्थाएं सकुशल रूप में संचालित की जाती हैं। इस सभी तंत्रों व व्यस्थाओं का एक ही लक्ष्य होता है कि इससे जुड़े हुए लोग सुखी रहें, व्यवस्थाएं सुचारू चलें और उनकी सुरक्षा, सुविधा आदि के द्वारा सार-संभाल होती रहे व विकास होता रहे।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ में भी शासन, विधान, मर्यादा व व्यवस्था के लिए संहिताएं और मर्यादावली आदि बने हुए हैं। चारित्रात्मा समुदाय के लिए अनुशासन संहिता निर्धारित की गई है तो गुरुकुलवासी चारित्रात्माओं के लिए एक अलग अनुशासन संहिता बनी हुई है। साधु के लिए मर्यादावली भी है। श्रावक समाज के लिए श्रावक संदेशिका के माध्यम से मर्यादा, व्यवस्थाएं निर्धारित की गई हैं। धर्मसंघ की संस्थाओं के लिए भी नियम हैं। हमारे धर्मसंघ में अनेक संस्थाएं हैं, उनमें से एक है जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा। इसका शुभारम्भ पूज्य कालूगणी के समय हुआ था। इस संस्था को बने हुए सौ वर्षों से अधिक का समय हो गया। तब लेकर अब तक महासभा ने खूब विकास किया है। महासभा का समाज में अपना वर्चस्व है।

महासभा के तत्त्वावधान में बहुत से अच्छे कार्य सुन्दर रूप में हो रहे हैं। केन्द्रीय स्तर पर महासभा तो क्षेत्रीय स्तर पर महासभा के छोटे रूप में सभाएं हैं। स्थानीय स्तर पर क्षेत्रों में संभाएं जिम्मेवार होती हैं। महासभा का कितना बड़ा सामाजिक जिम्मा है। कितना भी बड़ा कार्य हो महासभा को निर्धारित किया जा सकता है। महासभा तेरापंथ समाज की सर्वोपरि संस्था है। तेरापंथ समाज को महासभा जैसी संस्था का प्राप्त होना मानों सौभाग्य की बात है। मैंने तेरापंथी महासभा को 'संस्था शिरोमणि' कहा था। मेरा मानना है कि महासभा को संस्था शिरोमणि कहना सार्थक है।

महासभा के नेतृत्व में इतना विराट अधिवेशन हो रहा है। सभी सभाएं और प्रतिनिधि अपने-अपने क्षेत्रों में पूर्ण जागरूकता रखें। हमारी चारित्रात्माएं क्षेत्रों में खूब धार्मिक जागरणा करती रहें। महासभा खूब अच्छा विकास करती रहे।

महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने अपने डेढ़ वर्ष के कार्यकाल की गति-प्रगति की जानकारी प्रदान की। उन्होंने महासभा की विभिन्न गतिविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करते हुए समागत प्रतिनिधियों से आह्वान किया कि वे इन सभी समाजोपयोगी गतिविधियों में यथासंभव सहभागिता एवं सहयोग का लक्ष्य अवश्य बनायें।

प्रधान न्यासी सुरेशचन्द गोयल ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए कहा कि महासभा द्वारा संचालित अक्षय निधि कोष के सुदृढ़ीकरण, महाप्रज्ञ दर्शन म्युजियम, महाश्रमण कीर्तिगाथा एवं दर्शक दीर्घा, तेरापंथ विश्व भारती, महासभा की आर्थिक सुदृढ़ता आदि के बारे में जानकारी प्रदान की। समागत प्रतिभागियों को जागरूकता के लिए एक छोटा वीडियो क्लिप भी प्रस्तुत किया गया।

दोपहर के सत्र में बहुश्रुत परिषद के सदस्य मुनि दिनेशकुमारजी ने प्रतिनिधियों को आध्यात्मिक प्रशिक्षण प्रदान करते हुए जीवन में अध्यात्म के महत्व, प्रकार, लाभ आदि के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

तेरापंथ और तेरापंथ से संबंधित ट्रस्ट/संस्थाओं के बारे में महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया एवं महामंत्री विनोद बैद ने समुचित जानकारी प्रदान करते हुए तेरापंथ एवं तेरापंथ के आचार्यों के नाम से संचालित ट्रस्ट/संस्थाओं के महासभा के साथ एफिलियेशन की आवश्यकता पर बल दिया। 'कैसे हो नेतृत्व चयन एवं दायित्व हस्तांतरण' विषय पर महासभा पदा-धिकारी-गण ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

रात्रिकालीन सत्र में श्रावक संदेशिका की विभिन्न संबंधित धाराओं के प्रति जागरूकता वृद्धि की दृष्टि से 'श्रावक संदेशिका : चित्रों में बोध' विषय पर पीपीटी के माध्यम से प्रश्नात्मक प्रस्तुतिकरण किया गया। अनेक सदस्यों ने चित्रों के बारे में पूछे गये प्रश्नों का सही उत्तर प्रस्तुत किया। सभी प्रश्नों की संबंधित धारा को एलईडी स्क्रीन पर दर्शाते हुए समझाया गया। प्रेरक प्रशिक्षण के अंतर्गत मुनिश्री कुमारश्रमणजी ने महासभा पदाधिकारियों की जिज्ञासाओं को समाहित किया।

तृतीय क्विस : १५ अगस्त २०२३

प्रेरणा सत्र में परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी ने तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन के अंतिम दिन संभागियों को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि कार्य-कर्ताओं व चारित्रात्माओं को व्यक्तित्व विकास का प्रयास करना चाहिए। कितने-कितने कार्यकर्ता धर्मसंघ की सेवा करने वाले हैं। अपने धर्मसंघ के साथ-साथ दूसरों की जितनी सेवा हो सके, करने का प्रयास करना चाहिए। तेरापंथ की सभी संस्थाएं अच्छे कार्यकर्ताओं के व्यक्तित्व विकास के लिए कार्यशाला आदि का भी आयोजन कर सकते हैं और नए-नए कार्यकर्ताओं को आगे बढ़ने का अवसर प्रदान किया जा सकता है। जो अच्छे कार्यकर्ता हैं, उनके साथ रहकर भी कुछ अच्छा सीखा जा सकता है।

साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने जीवन विकास में राग के विभिन्न रूपों का उल्लेख करते हुए कहा कि हममें संघ के प्रति, गुरु के प्रति अनुरक्ति होनी चाहिए, जो संघ की श्रीवृद्धि में योगभूत बनती रहे। इसके लिए हम राग, पाप से मुक्त होने का प्रयास करें और अपनी आत्मा को निर्मल बनाने का प्रयास करें।

तृतीय व अंतिम दिवस के समापन सत्र में परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर की सन्निधि में आयोजित कार्यक्रम में महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने अपनी अभिव्यक्ति देते हुए बृहत, मध्यम एवं लघु श्रेणी की सभाओं में श्रेष्ठ, उत्तम एवं विशिष्ट पुरस्कार तथा उपसभाओं में श्रेष्ठ, उत्तम एवं विशिष्ट पुरस्कार प्राप्त क्षेत्रों के नामों की घोषणा की।

समागत सभाओं व उपसभाओं के साथ महासभा का संभागानुसार संवाद का क्रम भी काफी उपयोगी सिद्ध हुआ।

सम्मेलन की विभिन्न व्यवस्थाओं में सहयोग प्रदान करने हेतु आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति, मुंबई एवं तेरापंथी सभा, मुंबई को मोमेंटो से सम्मानित किया गया। चयनित श्रेष्ठ, उत्तम, विशिष्ट सभा एवं उपसभा को मोमेंटो प्रदान कर सम्मानित किया गया।

विभिन्न सत्रों में कार्यक्रम का संचालन महासभा के महामंत्री विनोद बैद, उपाध्यक्षगण नेमचंद बैद, सुमन नाहटा, अशोक कुमार तातेड़, विजयराज मेहता, नरेन्द्र कुमार नखत, सहमंत्री अनिल चण्डालिया, आलोक भंसाली तथा कृतज्ञता ज्ञापन न्यासी बाबूलाल बोथरा ने किया।

श्रेणी	श्रेष्ठ	उत्तम	विशिष्ट
ए - लघु सभा	कालांवली	इचलकरंजी	इरोड
बी- मध्यम सभा	गुलाबबाग	हुबली, भुज	लिलुआ
सी- बृहत सभा	दक्षिण हावड़ा, उधना	गुवाहाटी	बालोतरा, बेंगलुरू, चेन्नई
उपसभा	भिलोड़ा	माधवनगर, प्रान्तीज	लखावली, बिशनपुर

कठिनाई की स्थिति में भी सत्यनिष्ठा, मनोबल और सत्पुरुषार्थ श्रेयस्कर होते हैं।

-आचार्यश्री महाश्रमण

धार्मिक जीवों का बलिष्ठ और पापी जीवों का दुर्बल होना अच्छा : आचार्यश्री महाश्रमण

१८ अगस्त २०२३ नन्दनवन-मुम्बई

परमपावन पूज्यवर आचार्यश्री महाश्रमणजी ने भगवती सूत्र की व्याख्या करते हुए फरमाया कि श्रमणोपासिका जयंती एक महत्वपूर्ण श्राविका थी। वह भगवान महावीर की सन्निधि में उपस्थित थी। उस समय कौशाम्बिक नाम की नगरी हुआ करती थी। उस नगरी के बाहर चन्दरावतण नाम का चैत्य था। उस नगरी में श्रमणोपासिका जयंती का भतीजा राजा उदयन वहां था।

जयंती श्रमणोपासिका, शय्यात्तर का लाभ लेने वाली व तत्त्वों को जानने वाली और तपःकर्म करते हुए आत्मा को भावित करने वाली थी। एक बार भगवान महावीर उस नगरी में पधारे तो जयंती, मृगावती राजा उदयन आदि राज परिवार के साथ उनके दर्शन करने गये। भगवान की देशना सुनने के पश्चात राजा उदयन और उसकी माता मृगावती अपने घर लौट गये।

जयंती भगवान की पर्युपासना में बैठी थी। जयंति ने प्रश्न किया कि भन्ते! जीवों का बलिष्ठ होना अच्छा है या दुर्बल होना अच्छा है। प्रभु महावीर ने फरमाया- जयंती! कुछ जीवों का बलिष्ठ होना अच्छा है, कुछ जीवों का दुर्बल होना अच्छा है। उत्तर देने वाला सही-सटीक उत्तर दे सके तो प्रश्नकर्ता को संतोष हो सकता है। उत्तरदाता के उत्तर देते समय कई विकल्प हो सकते हैं कि किस प्रश्न का उत्तर देना या नहीं देना। जैसा अवसर लगे कर सकता है। पर केवलज्ञानी तो सर्वज्ञ होते हैं। उन्हें किसी ग्रन्थ या प्रमाण की अपेक्षा नहीं रहती।

भगवान महावीर ने उत्तर देते हुए कहा कि जो धार्मिक लोग हैं, उनका बलवान होना अच्छा है। वे बलवान रहेंगे तो अच्छा कार्य करते हुए स्व-पर का कल्याण कर सकेंगे। जो पापी-अधर्मी उनका दुर्बल होना ही ठीक है, ताकि वे पाप से मजबूरी में बचे रह सकें। वीर्य आत्मा बतायी गयी है, शरीर से संबंधित है। सिद्धों में वीर्य आत्मा नहीं होती।

गुरुदेव तुलसी का शारीरिक बल श्रेष्ठ था। कितनी लम्बी यात्राएं कर ली। पूज्य कालूगणी का अभी प्रसंग चल रहा है, उनमें भी कितना आत्मिक संकल्प बल था। पूज्यवर ने कालूयशोविलास की व्याख्या कराते हुए पूज्य कालूगणी के अनेक उपचारों के पश्चात भी रोग ठीक नहीं होने के प्रसंग को फरमाया।

पूज्यवर ने साध्वी मार्दवयशाजी को ६ की तपस्या का एवं टीना बैंगानी को ४६ की तपस्या व लकी बोराणा को १७ की तपस्या के प्रत्याख्यान करवाये।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी ने फरमाया कि बौद्धिक विकास के साथ आध्यात्मिक चेतना का विकास भी जरूरी है। मोह कर्म के विलय से आध्यात्मिक चेतना का विकास होता है। मोह का मूल है- राग और द्वेष। जिससे जीव प्रियता का संवेदन करता है, वह राग है और जहां अप्रियता का संवेदन है, वह द्वेष भाव है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

जैन संस्कार विधि से सामूहिक पचरंगी तप अनुष्ठान

कालू

साध्वी उज्ज्वलरेखाजी के सान्निध्य एवं श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, कालू के तत्वावधान में सामूहिक पचरंगी तप अनुष्ठान रखा गया, जिसमें ३३ भाई-बहिनों का पारणा सभा भवन में जैन संस्कार विधि से करवाया गया।

संस्कारक सुमित सांड व तेयुप अध्यक्ष योगेश नाहटा, मंत्री पवन बोथरा, उपाध्यक्ष मोहित सांड ने मांगलिक मंत्रोच्चार का संगान नमस्कार महामंत्र से शुरुआत करके कार्यक्रम को जैन संस्कार विधि से सानन्द संपादित किया, जिसे वहां उपस्थित तपस्वी सदस्यों और आमंत्रित समाज के व्यक्तियों ने उत्साहपूर्वक निहारते हुए जैन संस्कार विधि की भरपूर सराहना की।

तेरापंथी सभा अध्यक्ष बुधमल लोढ़ा और तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष चन्दा देवी दुगड़ ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

पुरानी ढालों पर आधारित क्विज प्रतियोगिता

भीलवाड़ा

अखिल भारती तेरापंथ महिला मंडल के आध्यात्मिक उपक्रम रिवाइवल घो.ची.पू.ली. के अंतर्गत तेरापंथ महिला मंडल भीलवाड़ा द्वारा पुरानी ढ़ालों पर आधारित क्विज प्रतियोगिता तेरापन्थ भवन नागौरी गार्डन में शासनश्री मुनिश्री हर्षलालजी के सानिध्य में आयोजित की गई। नवकार महामंत्र उच्चारण से कार्यक्रम की शुभ शुरुआत हुई। तेरापंथ महिला मंडल की बहिनों ने प्रेरणा गीत से मंगलाचरण किया। तेरापन्थ धर्मसंघ के चतुर्थ आचार्य जयाचार्य द्वारा रचित पांच गीतिकाओं पर क्विज प्रतियोगिता रखी गई। इस उपक्रम को रखने का उदेश्य यही है कि आत्म निर्जरा को सलक्ष्य मानते हुए इन प्रभावशाली, श्रद्धा भक्ति रस, विरक्त भावों से ओत-प्रोत गीतिकाओं का स्वाध्याय होना चहिए। तेमम अध्यक्ष मैना कांठेड़ ने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि ये पांचों गीतिकाओं की रचना इतनी विरल विकट परिस्थितियों में की गई। आज भी ये इतनी पावरफुल है कि अंतर मन से इनके साथ जुड़ जाते हैं तो हमारे जीवन की सब विघ्न, बाधायें दूर हो जाती हैं और हमें नई शक्ति का आभास होता है।

तेमम मंत्री अमिता बाबेल ने सभी विजयी प्रतिभागियों को बधाई देते हुए कहा कि ये गीतिकायें हम सबके भीतर नव ऊर्जा का संचरण करने वाली है। सभी इनका स्वाध्याय अवश्य करें। प्रतियोगिता की संयोजिका स्नेहलता झाबक एवं शोभना सिरोहिया ने अच्छे रोचक ढ़ंग से आयोजन का संचालन किया। सात राउंड में आयोजित इस प्रतियोगिता में १६ प्रतिभागियों ने भाग लिया। मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि प्रतिभागियों ने बहुत अच्छे आत्मविश्वास एवं उत्साह से भाग लिया। विनिता सुतरिया, पुष्पा पामेचा व टीना जैन का अच्छा सहयोग रहा। बहिनों की अच्छी उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन तेमम वरिष्ठ उपाध्यक्ष यशवन्त सुतरिया द्वारा किया गया। मुनिवर के मंगल पाठ एवं आशीर्वचन से प्रतियोगिता सम्पन्न हुई।

राइजिंग हाई टच द स्काई सीरिज़ की पाँचवी कार्यशाला का आयोजन

मुंबई

तेरापंथ महिला मंडल मुंबई के तत्वावधान में मुंबई कन्या मंडल द्वारा आयोजित राइजिंग हाई टच द स्काई सीरिज़ की पाँचवी कार्यशाला जिसका विषय था- अंधेरी ओरी से नंदनवन का गुरुदेव के सान्निध्य तथा साध्वीप्रमुखाश्रीजी की प्रेरणा से साध्वीश्री दीप्तियशाजी ने कार्यशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्रोचार से किया। साध्वीश्रीजी ने विषय को समझाते हुए अंधेरी ओरी के इतिहास को दर्शाया और तेरापंथ की स्थापना कैसे हुई, कैसे आचार्य भिक्षु ने अंधेरी ओरी में जहां अपने जीवन की परवाह न करते हुए उन्होंने वहाँ रात बिताई। दृढ़ संकल्प के साथ अनेक कठिनाइयों को पार करते हुए आगे बढ़े और तेरापंथ की स्थापना की। साध्वीश्रीजी ने तेरापंथ की आचार्य परंपरा व उनके सिद्धांत और मर्यादाओं के बारे में बताया। वर्तमान में ११वें आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ मुंबई नंदनवन बिराज रहे हैं। जन एकता का स्वप्न लेकर उन्होंने अपनी अणुव्रत यात्रा का शंखनाद किया है। साध्वीश्रीजी ने कन्याओं को ऐक्टिविटी के माध्यम से तेरापंथ के विभिन्न स्थल जहां तेरापंथ की विशिष्ट कार्य हुए जैसे - केलवा, बगड़ी, सिरीयारी, लाडनूं ,सरदारशहर और मुंबई इनके बारे में समझाते हुए ग्रुप ऐक्टिविटी करवाई। मुंबई महिला मंडल अध्यक्ष विमला कोठारी ने कन्याओं को मोटिवेट किया। कन्या मंडल प्रभारी मधु बफना, सहसंयोजिका नेहा सोलंकी व निकिता चौहान का सराहनीय सहयोग रहा। संयोजिका काजल मादरेचा ने कार्यशाला का संचालन किया। सहप्रभारी पूनम परमार ने आभार ज्ञापन किया। लगभग २५० कन्याओं की उत्साहवर्धक उपस्थिति रही।

धार्मिकता का आचरण कर जीवन को बनाएं सफल : आचार्यश्री महाश्रमण

१७ अगस्त २०२३
नन्दनवन-मुम्बई

महामनीषी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने भगवती सूत्र की व्याख्या कराते हुए फरमाया कि श्रमणोपासिका जयंती भगवान महावीर के सान्निध्य में उपस्थित है और अनेक प्रश्न जयंती ने प्रस्तुत किये हैं। कुल १६ प्रश्नों की तालिका हो जाती है। जयंती ने एक प्रश्न किया कि भन्ते! सोना अच्छा रहता है या जागना अच्छा रहता है। उत्तर दिया गया- कुछ जीवों का सुप्त रहना अच्छा है, कुछ जीवों के लिए जागना अच्छा है।

जयंती ने पूछा- भगवन्! यह बात किस आधार पर फरमाई जा रही है। बताया गया कि प्राणियों के दो भाग हो जाते हैं- अधार्मिक प्राणी और धार्मिक प्राणी। अधार्मिक जीवों का सोना अच्छा है, वे जीव सोये रहेंगे तो कितने प्राण भूत जीवों, सत्व जीवों को दुःखी नहीं कर पायेंगे। अधार्मिक लोग सोये रहेंगे तो उतना अधर्म का पाप कर्म तो नहीं लगेगा। वे बुरे काम से बचे रहेंगे। जो जीव धार्मिक हैं, धर्म से हर कार्य करते हैं, ऐसे जीवों का जागृत रहना अच्छा है। उनके द्वारा कोई भी जीव दुःखी नहीं होगा। वे जागृत रहेंगे तो स्वयं धर्म की साधना करते हुए दूसरो को भी धर्म के पथ पर चलाते रहेंगे।

एक होता है- बाहर से सोना या जागना। एक होता है- भीतर से जागृत या मूर्च्छा में रहना। आलस्य तो मनुष्यों के शरीर में रहने वाला महान शत्रु है। आलस्य विकास में बाधा पहुंचाने वाला होता है। पापाचार करने वालों के लिए आलस्य अच्छा है। इस प्रश्न से हम जान सकते हैं कि आदमी के जीवन में धर्म कितना है और पाप कितना है।

तीन प्रकार के मनुष्य हो सकते हैं- (१) बहुत धार्मिक- जो स्व-पर का कल्याण करने वाले होते हैं। यह उत्तम श्रेणी के मनुष्य होते हैं। (२) अधार्मिक मनुष्य- जो पापाचार करने वाले होते हैं। धर्म में आस्था नहीं होती है। (३) मध्यम श्रेणी के मनुष्य- जो न ज्यादा पाप करते हैं, न ज्यादा धर्म, न दूसरों को ज्यादा तकलीफ देते हैं।

गृहस्थ सुबह जल्दी जागकर धर्माराधना करें। जल्दी सोयें, जल्दी उठें। रात्रि का अन्तिम प्रहर तो अमृत वेला- ब्रह्म मुहूर्त्त होता है। समय का मूल्यांकन करें। अपने जीवन में धार्मिकता का आचरण करें, ताकि हमारा जागना सफल हो सके।

पूज्यवर ने कालूयशोविलास व्याख्यान में पूज्य कालूगणी के अस्वस्थता के प्रसंग के बारे में फरमाया। पूज्यवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाये। विमल सोनी ने गंगापुर रंगभवन हिरण परिवार में अपने ननिहाल के कुछ प्रसंग बताते हुए अपने भाव व्यक्त किये एवं पूज्यवर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

तुम दूसरों के आशीर्वाद की अपेक्षा रखते हो, पर क्या स्वयं सम्यक् पुरुषार्थ करते हो?

-आचार्यश्री महाश्रमण

सम्यक दर्शन कार्यशाला के आयोजन

सुनाम

साध्वी कनकरेखाजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन के हॉल में सम्यक दर्शन कार्यशाला का विधिवत शुभारंभ बड़े ही हर्षोल्लास के साथ हुआ। साध्वी कनकरेखाजी ने उद्घाटन सत्र में अपने ओजस्वी वक्तव्य के साथ अध्यात्म परिषद् को संबोधित करते हुए कहा कि भगवान महावीर के सिद्धांतों को समझने के लिए सम्यक् ज्ञान एवं सम्यक् दर्शन को जानना बहुत जरूरी है। जब तक हमारा दृष्टिकोण सम्यक् नहीं होगा यथार्थ तत्व का आचरण नहीं कर सकते। सही तत्व को सही समझने के लिए एवं मोक्ष मार्ग की ओर प्रस्थान करने के लिए दर्शन का सम्यक् होना अति आवश्यक है।

साध्वीश्रीजी ने कहा कि अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में प्रतिवर्ष चल रही कार्यशाला का अभिनव रूप सम्यक् दर्शन कार्यशाला के रूप में हमारे सामने आया है। इसके माध्यम से हर व्यक्ति अध्यात्म जगत में प्रवेश कर अध्यात्म से संबंधित अनेक जानकारियों से परिचित हो सकता है। मुझे प्रसन्नता है यहां पर भी कार्यशाला के बारे में सभी में अच्छा उत्साह है। सवालों के चलते हुए सिलसिले में साध्वी गुणप्रेक्षाजी व साध्वी सम्बरविभाजी की अहम भूमिका रही।

तेयुप अध्यक्ष अरिहंत गोयल ने स्वागत भाषण के साथ सभी का स्वागत किया। समधुर गीतिका के साथ प्रिया जैन, लीना जैन व नीतू जैन ने कार्यशाला का शुभारंभ किया। संचालन सुमित गर्ग ने किया।

जसोल

सम्यक् दर्शन कार्यशाला २०२३ का विधिवत् शुभारंभ शासनश्री साध्वी कमलप्रभा ठाणा-५ के सान्निध्य में किया गया। साध्वी आरोग्ययशाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह कार्यशाला आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा लिखित पुस्तक 'शरीर और आत्मा' पर आधारित है। १५ दिन चलने वाली इस कार्यशाला में सम्मिलित संभागी कार्यशाला के नियमों का पालन करें।

तेरापंथ युवक परिषद् अध्यक्ष मनीष बोकड़िया द्वारा स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। सिवांची मालाणी तेरापंथ संस्थान अध्यक्ष डूंगरचन्द सालेचा, तेरापंथ सभा मंत्री कांतिलाल ढ़ेलडिया, तेरापंथ महिला मंडल से पुष्पादेवी बुरड़ सहित प्रबुद्ध वक्ताओं ने अपने विचार प्रस्तुत किये। तेयुप मंत्री दिनेश वडेरा ने कार्यशाला के नियमों की जानकारी दी। कार्यशाला का संचालन तेयुप उपाध्यक्ष ललित सालेचा ने किया।

सरदारपुरा (जोधपुर)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद और समण संस्कृति संकाय लाडनूं के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित सम्यक दर्शन कार्यशाला का शुभारंभ मेघराज तातेड़ भवन, सरदारपुरा में साध्वी कुंदनप्रभाजी के सान्निध्य में हुआ।

साध्वी विद्युतप्रभाजी ने उपस्थित प्रतिभागियों को प्रथम दो अध्याय का अध्ययन कराया और संबंधित जिज्ञासा का समाधान किया। साध्वीश्रीजी ने विस्तार से राजा प्रदेशी के जीवन विकास की भूमिकाओं को बताया कि कैसे एक नास्तिक राजा, आचार्य केशी से शिक्षा पाकर आस्तिक बना। कैसे एक हिंसक और क्रूर राजा समता को अपनाकर बारहव्रती श्रावक बना। क्रूर और हिंसक से समतावान बनने में चेतना के उर्ध्वारोहण की अद्भुत घटना को पुस्तक में बहुत ही सरल और सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया है।

साध्वीश्रीजी ने इस अवसर पर फरमाया कि यह कार्यशाला आचार्यश्री महाप्रज्ञ की अनुपमेय कृति 'शरीर और आत्मा' पुस्तक पर आधारित है, जिससे अध्ययन से आध्यात्मिक ज्ञान का विकास होगा। समाज के सभी वर्गों को इस कार्यशाला में भाग लेना चाहिये।

इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष कैलाश जैन, मंत्री मिलन बांठिया, कार्यशाला समन्वयक सविता तातेड़ सहित सभी वर्ग के सदस्यों की उपस्थिति रही।

पर्वत पाटिया

सम्यक् दर्शन कार्यशाला २०२३ का शुभारम्भ साध्वी हिमश्रीजी के सान्निध्य में किया गया। साध्वीश्रीजी ने नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला का शुभारंभ किया। साध्वी चैतन्ययशाजी ने मंगलाचरण जैन विद्या की गीतिका के द्वारा किया।

साध्वीश्रीजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह कार्यशाला आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा लिखित पुस्तक 'शरीर और आत्मा' पर आधारित है। इसमें सभी भाग लें एवं सभी संभागी कार्यशाला के नियमों का अवश्य पालन करें। तेयुप मंत्री पवन कुमार बुच्चा ने इस कार्यशाला में पधारे हुए सभी का स्वागत एवं अभिनंदन किया। सभी सम्भागियों को कार्यशाला के नियमों की जानकारी दी गई। कार्यशाला किट का वितरण संयोजक पंकज बुच्चा द्वारा किया गया।

नव युवती सम्मेलन का आयोजन

चेन्नई

साध्वी लावण्यश्रीजी के पावन सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल, चेन्नई के तत्वावधान में 'यौवन की दहलीज पर कदम रखा है आपने, आइए जानिए सुकून की राह है आपके सामने' विषय पर नव युवती सम्मेलन का आयोजन हुआ। साध्वीश्रीजी ने नमस्कार महामंत्र के द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ किया। तेमम अध्यक्ष लता पारख ने सभी बहनों का स्वागत करते हुए कहा कि बच्चों और बड़ों के बीच में एक मजबूत कड़ी जोडनी है।

साध्वी लावण्यश्रीजी ने अपने मंगल उद्बोधन में फरमाया कि तेरापंथ धर्मसंघ के अधिशास्ता होते हुए भी परम पूज्य गुरुदेव में कितनी सरलता व विनम्रता है, साध्वीप्रमुखा शासनमाता का जीवन कितना सरल था। हम छोटे से दायरे में, छोटे से परिवार में रहने वाले हैं, फिर भी सहन नहीं कर सकते। हमें बड़ों के त्याग में सहयोग कर उनको चित्त समाधि देने का प्रयास करना चाहिए, जिससे कर्म निर्जरा होगी। नारी जिस घर में जाती है, उस घर को सजाना, संवारना चाहिए।

साध्वी सिद्धांतश्रीजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि हमारे घर के बुजुर्गों की झुर्रियों में हजार-हजार अनुभव होते हैं। वह हमें अनुभव के आधार पर बहुत सारी बातें बता देते हैं, लेकिन उस अवसर को हम खो देते हैं। साध्वीश्री जी ने मोमबत्ती के उदाहरण के माध्यम से आशा और विश्वास के साथ जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान की।

साध्वी दर्शितप्रभाजी ने 'जिंदगी में सुकून किस चीज से मिलता है और किस चीज से सुकून नहीं मिलता', विषय पर अपने विचार रखे, जो बहुत ही इंटरएक्टिव रहा। सभी बहनों ने साध्वीश्रीजी के समक्ष अपने विचार रखे।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य दीपा पारख ने अपने जीवन के अनुभवों को शेयर किया। कार्यक्रम में बहनों और तेमम की सराहनीय प्रस्तुतियां रहीं। कार्यक्रम की संयोजिका रीमा सिंघवी, रानी माण्डोत, पूजा भंडारी और सुमन मुथा रही।

क्विज प्रतियोगिता का आयोजन

जसोल

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल जसोल द्वारा शासनश्री साध्वीकमलप्रभाजी के सान्निध्य में उपाध्यक्ष जयश्री की अध्यक्षता में 'घो.ची.पू लि़ क्विज' का आयोजन किया गया। साध्वीजी द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम का शुभारंम्भ किया गया।

उपाध्यक्ष जयश्री ने विषय की जानकारी देते हुए क्विज के नियम बताए। सभी ग्रुप के प्रतियोगियों को शुभकामना दी। कुल चार-चार सदस्य के पांच ग्रुप बनाए गये। ग्रुप्स के नाम अ.भी.रा.शी.को. तपस्वियों के नाम पर रखे गये। क्विज में गीतिकाओं को अलग-अलग तरीके से प्रस्तुत करते हुए कुल पांच राउंड खेले गये। क्विज में अमीचंद ग्रुप ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

साध्वीश्रीजी ने बताया कि ऐसी प्रतियोगिताओं में गीतिकाओं के संगान से लय, अर्थ और हमारे इतिहास की भी जानकारी होती है, धर्म की प्रभावना होती है। मंत्री अरुणा डोसी ने घो.ची.पू लि़ के अंतर्गत चलाई रिवाइवल पुरानी गीतिकाओं की क्लास के लिए अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल का आभार ज्ञापन किया।

गायन प्रतियोगिता का आयोजन

गंगाशहर

तेरापंथ युवक परिषद् एवं तेरापंथ महिला मंडल गंगाशहर के संयुक्त तत्त्वावधान में शासनश्री साध्वी शशिरेखाजी एवं साध्वी ललितकलाजी के सान्निध्य में युगल गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। साध्वी रोहितप्रभाजी की गीतिका से कार्यक्रम का मंगलाचरण हुआ। साध्वी कांतप्रभाजी की प्रेरणा से इस कार्यक्रम में अनेक जोड़ों ने भाग लिया।

तेयुप उपाध्यक्ष ललित राखेचा ने निर्णायक पुखराज शर्मा एवं सुमन शर्मा का परिचय दिया एवं प्रतियोगिता संबंधी नियम बताए। शासनश्री शशिरेखाजी ने जीवन में संगीत का महत्व बताते हुए कहा कि संगीत सिर्फ एक कला मात्र नहीं है, यह अपने आप में एक चिकित्सा थेरेपी भी है। संगीत से रोगों का इलाज भी किया जा सकता है। संगीत अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का भी सशक्त माध्यम है।

निर्णायकगण द्वय पुखराज एवं सुमन शर्मा ने गीत की प्रस्तुति दी एवं प्रतियोगिता के विजेताओं की घोषणा की। तेयुप एवं तेमम द्वारा निर्णायकगण एवं विजेताओं का सम्मान किया गया। संचालन तेमम सदस्य रूबी छाजेड़ द्वारा किया गया।

बिना सोचे समझे सहसा किया गया कार्य अनर्थकारी हो सकता है।

-आचार्यश्री महाश्रमण

ज्ञानार्थियों का अध्यात्म का शांतिपीठ में आध्यात्मिक भ्रमण

गंगाशहर

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गंगाशहर द्वारा ज्ञानार्थियों को आध्यात्मिक भ्रमण हेतु सरदारशहर युगप्रधान आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की समाधि स्थल, अध्यात्म का शांतिपीठ पर ले जाया गया। इस आध्यात्मिक यात्रा के दौरान ज्ञानशाला के १८१ ज्ञानार्थी शामिल हुए। गंगाशहर तेरापंथ भवन से मुनि श्रेयांसकुमारजी द्वारा मंगल पाठ श्रवण करके यात्रा का प्रारंभ किया गया। उसके पश्चात समाधि स्थल पर 'ऊँ श्री महाप्रज्ञ गुरुवे नमः' का समवेत स्वरों में जप किया गया। इस शांत वातावरण में जप करके सभी को मानसिक शांति की अनुभूति हुई। उसके पश्चात सभी बच्चों को महाप्रज्ञ दर्शन अत्याधुनिक म्यूजियम दिखाया गया। इस म्यूजियम में प्रवेश करते ही आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की आवाज में मंगलवाणी, जैन दर्शन, आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन पर आधारित १८० डिग्री की एलईडी स्क्रीन पर उनके ९० वर्षों तक अपने जीवन में चरितार्थ करने वाले सभी कार्यों का उल्लेख अत्याधुनिक डॉक्यूमेंट्री द्वारा बच्चों को दिखाया गया। इसके अलावा तेरापंथ दर्शन, आचार्य महाप्रज्ञ का सुनहरा बचपन, अहिंसा यात्रा, कालचक्र, महाप्रज्ञ वाणी से मंत्र समाधान, प्रेक्षाध्यान का प्रयोग, जीवन विज्ञान, महाश्रमण दीर्घा व महाश्रमण संवाद में ज्ञानार्थियों ने अपनी जिज्ञासा गुरुदेव के समक्ष रखी जिसका समाधान टेक्नोलॉजी के माध्यम से गुरुदेव के आशीर्वचनों द्वारा किया गया। अंत में लेजर लाइट के द्वारा प्रज्ञा गीतों का श्रवण किया गया।

बच्चों को सरदारशहर में विराजित साध्वी सुदर्शनाश्रीजी के दर्शन करवाए गए। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि ज्ञानशाला गुरुदेव तुलसी का एक महत्वपूर्ण आयाम है। छोटे-छोटे संकल्पों से बच्चों का भावी जीवन नैतिक और प्रामाणिक बनाया जाए। आदर्श भावी पीढ़ी तैयार हो सके, इस दृष्टि से ज्ञानशाला आज विशाल रूप में पूरे देश में संचालित है। उन्होंने गीतिका के माध्यम से ज्ञानार्थियों व प्रशिक्षिकाओं को प्रेरक संदेश दिया। उन्होंने कहा कि बच्चों को तैयार करने में प्रशिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ज्ञानशाला का मुख्य ध्येय है कि बच्चे ज्ञानवान, विनम्र, नैतिक व अनुशासित बनें। राजस्थान थली क्षेत्र की ज्ञानशाला आंचलिक संयोजिका कांता चंडालिया ने अपना वक्तव्य दिया और बताया कि गंगाशहर क्षेत्र की ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी सुसंस्कारों से सुसज्जित और अनुशासित रूप में हमारे सरदारशहर की पावन धरा पर आए हैं, इसलिए हम सबको हर्ष की अनुभूति हो रही है। सरदारशहर तेरापंथी सभाध्यक्ष सिद्धार्थ चंडालिया द्वारा पधारे हुए सभी पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं का अभिनंदन किया गया। गंगाशहर तेरापंथी सभाध्यक्ष अमरचंद सोनी द्वारा सरदारशहर सभाध्यक्ष व सरदारशहर ज्ञानशाला की पूरी टीम, तेयुप, महिला मंडल का आभार ज्ञापन किया गया।

ज्ञानार्थी संगीत रोलिंग शिल्ड प्रतियोगिता

चेन्नई

साध्वी लावण्यश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में श्रीमती मोहनबाई सोहनलाल डांगरा ज्ञानशाला ज्ञानार्थी संगीत रोलिंग शिल्ड प्रतियोगिता रखी गई, जिसमें ६ से १४ वर्ष के बालक बालिकाओं ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने धार्मिक व देशभक्ति के ऊपर रखे गये गीतों का संगान किया। प्रतियोगिता में चयनित प्रथम तीन बच्चों को सम्मानित किया गया। संगीत प्रतियोगिता के संयोजक नवीन मूणोत थे। इस कार्यक्रम में मदुरै से समागत मदुरै सभा पूर्व अध्यक्ष ओमप्रकाश कोठारी एवं अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के कार्यसमिति सदस्य नितेश कोठारी की उपस्थिति रही। श्रावक समाज की भव्य उपस्थिति में साध्वीश्रीजी ने मंगल पाथेय प्रदान कराया।

योगक्षेम अभातेयुप योगक्षेम योजना

* अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
* श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
* श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
* श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
* श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
* श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
* श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
* श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
* श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
* श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
* श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
* श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
* श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
* श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
* श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000

अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत अणुव्रत सेमिनार का आयोजन

कोलकाता

अणुव्रत अमृत महोत्सव के अंतर्गत अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में मुनि जिनेशकुमारजी के सान्निध्य में अणुव्रत सेमिनार (राज्यस्तरीय) का आयोजन कला मंदिर में अणुव्रत समिति, कोलकाता द्वारा आयोजित किया गया। सेमिनार का विषय था- 'आजाद भारत की प्रगति में अणुव्रत का योगदान।' सेमिनार में मुख्य अतिथि के रूप में असम के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया, उनकी धर्मपत्नी अनीता कटारिया व गरिमामयी उपस्थिति के रूप में अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर उपस्थित थे। इस अवसर पर अणुविभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रताप दुगड, महामंत्री भीखम सुराना, अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन, अणुविभा मीडिया से विरेन्द्र बोहरा, अणुविभा सदस्य विकास दुगड़ सहित अणुव्रत समिति के पदाधिकारी, सदस्य व विभिन्न संस्थाओं के गणमान्य व्यक्ति अच्छी संख्या में विशेष रूप से उपस्थित थे।

इस अवसर पर उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित करते हुए मुनि जिनेशकुमारजी ने कहा- 'भारत की आजादी का अमृत काल चल रहा है और अणुव्रत आन्दोलन का भी अमृत महोत्सव वर्ष चल रहा है। भारत निरन्तर प्रगति कर रहा है । प्रगति जब सिर्फ भौतिक होती है तब वह विनाश की ओर अग्रसर होती है और प्रगति जब नैतिक होती है तब वह राष्ट्र की समृद्धि व सुख-शांति का कारण बन जाती है। राष्ट्रसंत आचार्य श्री तुलसी ने भारत को नैतिक प्रगति व मूल्यों से समृद्ध करने हेतु १ मार्च १९४९ को अणुव्रत आन्दोलन का सूत्रपात किया। जाति, सम्प्रदाय, प्रान्त आदि से ऊपर उठकर नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा वाला यह आन्दोलन हरिजन की झोपड़ी से लेकर राष्ट्रपति भवन तक पहुंचा है।'

मुनि जिनेशकुमारजी ने आगे कहा- 'अणुव्रत एक आचार संहिता ही नहीं अपितु पूरा जीवन दर्शन है। अणुव्रत का अर्थ है-छोटे-छोटे नियम। आचार्यश्री महाश्रमणजी अणुव्रत यात्रा पर हैं। पूज्यवर की पावन प्रेरणा से एक करोड़ से भी अधिक लोगों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया है। अणुव्रत जीवन का दर्शन है। अणुव्रत जैन नहीं गुडमैन बनाता है। अणुव्रत क्रियाकाण्डों पर नहीं बल्कि चारित्र शुद्धि पर ध्यान देता है। सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति का विकास ही जीवन को समृद्धि की ओर अग्रसर करता है। अणुव्रत नैतिक चेतना का अग्रदूत, मानवीय एकता का प्रतीक, एक सुरक्षा कवच और ज्वलंत समस्याओं का समाधायक है। अणुव्रत शाश्वत सत्य व मानवता का शुभ भविष्य है, धर्म और व्यवहार का सेतु है। आज पूरा विश्व हिंसा से ग्रसित है, अणुव्रत हिंसा का समाधान अहिंसा के रूप में प्रस्तुत करता है। आज देश को अणुबम नहीं अणुव्रत की आवश्यकता है।'

मुख्य अतिथि असम के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया ने अपने प्रभावी वक्तव्य में कहा- आजादी के ७५ वर्षों में देश ने प्रगति की है अगर प्रगति के साथ नैतिकता जुड़ जाए तो चार चाँद लग सकते हैं। आचार्यश्री तुलसी ने सन् १९४९ में अणुव्रत का पावन संदेश इस देश को दिया। उनके अणुव्रत गीत में यह संदेश दिया गया है कि व्यक्ति सुधार से समाज सुधार और समाज सुधार से राष्ट्र का सुधार संभव है। अणुव्रत गीत सबके लिये एक प्रार्थना होनी चाहिए। इसकी एक पंक्ति 'संयममय जीवन हो' को ही अपना लें तो हमारे जीवन का उत्थान संभव है। मेरा सौभाग्य रहा है कि मुझे आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञजी और आचार्यश्री महाश्रमणजी के चरणों में बैठने का अवसर मिला है। उन सभी का हमारे पर बहुत ऋण है। मैं भी अणुव्रत के संकल्पों को निभाने का प्रयास करूंगा। सभी अणुव्रत के द्वारा समाज सुधार का प्रयत्न करते रहें।

अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने अणुव्रत के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए राज्यपाल महोदय से राजभवन में अणुव्रत पट्ट स्थापित करने हेतु आग्रह किया। अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन ने अणुव्रत अमृत महोत्सव के सन्दर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए अणुव्रत की महत्ता पर प्रकाश डाला। बाल मुनि कुणालकुमारजी ने 'बदले युग की धारा' गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत समिति के कार्यकर्ताओं द्वारा 'संयममय जीवन हो' गीत द्वारा मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण अणुव्रत समिति कोलकाता के अध्यक्ष प्रदीप सिंधी ने दिया। अणुव्रत आचार संहिता का वाचन मुनि जिनेशकुमारजी द्वारा करवाया गया। राज्यपाल महोदय गुलाबचंद कटारिया व उनकी धर्मपत्नी अनिता कटारिया का परिचय अणुव्रत समिति कोलकाता की उपाध्यक्षा डॉ सुनिता सेठिया ने प्रस्तुत किया। आभार ज्ञापन अणुव्रत समिति कोलकाता के मंत्री नवीन दूगड़ ने किया। अतिथियों का सम्मान अणुविभा व अणुव्रत समिति कोलकाता द्वारा दुपट्टा, साहित्य, मोमेण्टों, अणुव्रत आचार संहिता पट्ट व अमृत महोत्सव किट भेंट कर किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ व अंत में राष्ट्रगान का संगान किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंदजी ने किया। कार्यक्रम से पूर्व अणव्रत की डोक्यूमेन्ट्री भी दिखाई गई। कार्यक्रम को सफल बनाने अणुव्रत समिति के कार्यकर्ताओं व संघीय संस्थाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इस अवसर पर हावड़ा अणुव्रत समिति, सैंथिया अणुव्रत समिति की भी उपस्थिति रही। इस आयोजन के लिए अणुविभा द्वारा स्थानीय अणुव्रत समिति का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में अच्छी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे।

मनोनुशासनम्

आचार्य तुलसी

(क्रमशः)

तृतीय भूमिका

(१) प्रेक्षाध्यान
  (क) श्वास-प्रेक्षा–प्रेक्षाध्यान सूक्ष्म श्वास के साथ– कायोत्सर्ग मुद्रा में, सुखासन या पद्मासन में स्थित हो सूक्ष्म श्वास के साथ श्वास-प्रेक्षा का अभ्यास करें।
  समय–दस मिनट से एक घंटा तक।
  (ख) सहज प्रकम्पन-प्रेक्षा– सिर से लेकर पैर तक प्रत्येक अवयव में होने वाले सहज प्रकम्पनों का निरीक्षण करें।
  समय–पाँच मिनट से एक घंटा तक।
  (ग) सामायिक–ज्ञाता और द्रष्टा के रूप में इंद्रिय-विषयों की संप्रेक्षा।
  समय–पाँच मिनट से एक घंटा तक।
(२) प्रेक्षाध्यान : अभिमेष प्रेक्षा
  समय–पाँच मिनट से नौ मिनट तक।
(३) भावना-योग
  (क) अशरण-अनुप्रेक्षा
  समय–पाँच मिनट से आधा घंटा तक।
  (ख) अर्हम् भावना
  समय–पाँच मिनट से आधा घंटा तक।
  (ग) 'ऐं' भावना
  समय–पाँच मिनट से आधा घंटा तक।
(४) श्वास-संयम : केवल कुम्भक
  पूरक-रेचक किए बिना श्वास भीतर हो तो भीतर, बाहर हो तो बाहर, जहाँ कहीं हो उसे वहाँ रोककर कुम्भक किया जाए। दस या पंद्रह आवृत्तियाँ की जाए।
(५) संकल्प-योग
  प्रातःकालीन जागरण के साथ पाँच मिनट तक भावना का अभ्यास करें। जिन गुणों का विकास चाहें, उन गुणों की तन्मयता का अनुभव करें–उन गुणों से चित्त को भावित करें।
(६) प्रतिक्रमण-योग
  रात्रि-शयन से पूर्व पाँच मिनट तक अपनी अतीत की प्रवृत्तियों का सजगतापूर्वक निरीक्षण करें–समय की अपेक्षा से प्रतिलोभ निरीक्षण करें।
(७) भाव-क्रिया
  अपनी दैनिक प्रवृत्तियों में भाव-क्रिया का अभ्यास करें–वर्तमान क्रिया में तन्मय रहने का अभ्यास करें। जैसे–चलते समय केवल चलने का ही अनुभव हो, खाते समय केवल खाने का ही, इत्यादि। जो क्रिया करें, उसकी स्मृति बनी रहे।

चतुर्थ भूमिका

(१) प्रेक्षाध्यान
  (क) श्वास-प्रेक्षा : प्रेक्षाध्यान सूक्ष्म श्वास के साथ
  समय–दस मिनट से एक घंटा तक।
  (ख) संयम–मन, वचन, काया की जो माँग सामने आए, उसे अस्वीकार करना, विकल्प का उत्तर न देना–प्रतिक्रिया न होने देना। केवल इंद्रियों से काम लेना, उनके साथ मन को न जोड़ना। ईहा न करना। प्रियता और अप्रियता के मध्य बिंदु की खोज करना, मध्य में रहना–मध्यस्थ भाव का विकास करना।
  (ग) सामायिक–ज्ञाता और द्रष्टा के रूप में विचार-संप्रेक्षा।
(२) प्रेक्षाध्यान : अनिमेष-प्रेक्षा
  समय–पाँच मिनट से नौ मिनट तक।
(३) भावना-योग
  (क) मैत्री-अनुप्रेक्षा
  समय–पाँच मिनट से एक घंटा तक।
  (ख) अर्हम् भावना
  समय–पाँच मिनट से आधा घंटा तक।
  (ग) 'ऐं' भावना
  समय–पाँच मिनट से आधा घंटा तक।
(४) श्वास-संयम : केवल कुम्भक
  पूरक-रेचक किए बिना श्वास भीतर हो तो भीतर, बाहर हो तो बाहर, जहाँ कहीं हो उसे रोककर कुम्भक किया जाए। दस या पंद्रह आवृत्तियाँ की जाएँ।
(५) संकल्प-योग
  प्रातःकालीन जागरण के साथ पाँच मिनट तक भावना का अभ्यास करें। जिन गुणों का विकास चाहें, उन गुणों की तन्मयता का अनुभव करें–उन गुणों से चित्त को भावित करें।
(६) प्रतिक्रमण-योग
  रात्रि-शयन से पूर्व पाँच मिनट तक अपनी अतीत की प्रवृत्तियों का सजगतापूर्वक निरीक्षण करें–समय की अपेक्षा से प्रतिलोम निरीक्षण करें।
(७) भाव-क्रिया
  अपनी दैनिक प्रवृत्तियों में भाव-क्रिया का अभ्यास करें–वर्तमान क्रिया में तन्मय रहने का अभ्यास करें। जैसे–चलते समय केवल चलने का ही अनुभव हो, खाते समय केवल खाने का ही, इत्यादि। जो क्रिया करें, उसकी स्मृति बनी रहे।

पाँचवीं भूमिका

(१) प्रेक्षाध्यान
  (क) श्वास-प्रेक्षा–पूर्ववत्।
  (ख) धर्म-प्रेक्षा–(धर्म ध्यान)
  भूत, वर्तमान और भविष्य के धर्मों अथवा पर्यायों को देखना–विपाक-प्रेक्षा, अपायप्रेक्षा, संस्थान-प्रेक्षा।
  (ग) सामायिक–ज्ञाता और द्रष्टा के रूप में वेदना-संप्रेक्षा।
(२) प्रेक्षाध्यान : अनिमेष प्रेक्षा
  पूर्ववत्।
  (ख) अर्हम् भावना
  समय–पाँच मिनट से आधा घंटा तक।
  (ग) ॐ ह्रीं श्रीं अर्हम् नमः भावना
  समय–पाँच मिनट से आधा घंटा तक।
(४) श्वास-संयम
  एक मिनट में एक श्वास या दो मिनट में एक श्वास का प्रयोग।
(५) संकल्प-योग
  पूर्ववत्।
(६) प्रतिक्रमण-योग
  पूर्ववत्।
(७) भाव-क्रिया
  पूर्ववत्।

पाँच भूमिकाओं की कालावधि इस प्रकार है–
प्रथम भूमिका – एक मास
द्वितीय भूमिका – दो मास
तृतीय भूमिका – तीन मास
चतुर्थ भूमिका – चार मास
पंचम भूमिका – पाँच मास

(२) प्रेक्षाध्यान के आधारभूत तत्त्व

जैन साधकों की ध्यान-पद्धति क्या है–यह प्रश्न किसी दूसरे ने नहीं पूछा, स्वयं हमने ही अपने आपसे पूछा। पंद्रह वर्ष पूर्व (वि०सं० २०१७), यह प्रश्न मन में उठा और उत्तर की खोज शुरू हो गई। उत्तर दो दिशाओं से पाना था–एक आचार्य से, दूसरा आगम से। आचार्यश्री ने पथ-दर्शन दिया और मुझे प्रेरित किया कि आगम से इनका विशद उत्तर प्राप्त किया जाए।

(क्रमशः)

संबोधि

आचार्य महाप्रज्ञ

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(३६) अशङ्कितानि शङ्कन्ते शङ्कितेषु ह्यशङ्कितााः।
असंवृत्ता विमुह्यन्ति, मूढा यान्ति चलं मनः।।

असंवृत्त व्यक्ति मुग्ध होते हैं। जो मूढ है, उनका मन चंचल होता है। वे उन विषयों में शंका करते हैं जो शंका के स्थान नहीं हैं और उन विषयों में शंका नहीं करते, जो शंका के स्थान हैं।

जिनकी इंद्रियों और मन का द्वार बाहर की तरफ खुला है, वे असंवृत्त होते हैं। असंवृत्त व्यक्ति अमृत, अनश्वर में सदा सशंकित रहता है। उसका जो कुछ परिचय है, वह मृत-नश्वर से है। कुछ समझते हैं, लेकिन जानते हुए भी सशंक में अशंक की भाँति हाथ डालते हैं। बुद्ध ने कहा–'नित्य प्रज्वलित इस संसार में कैसा हास्य और आनंद? अंधकार से घिरे हुए लोगो! प्रदीप की खोज क्यों नहीं कर रहे हो?' यह बुद्ध पुरुषों का दर्शन है। उन्हें आग दिखाई दे रही है। लोग जल रहे हैं। किंतु मनुष्य को यदि आग दिखाई दे तो वह अपने को बचा सकता है। उसे दिखाई दे रही है ठंड। यह उल्टा दर्शन है। इसलिए महावीर ठीक कहते हैं–'वे लोग मूढ़ हैं जो मृत में मुग्ध हो रहे हैं। अशंकित में पैर रखते हुए शंका करते हैं और शंकित स्थानों में अशंकित होकर विहरण करते हैं। अमृत की उपलब्धि के बिना उनकी पीड़ा शांत नहीं हो सकती। अमृत को खोजो, शाश्वत को खोजो, अनश्वर को प्राप्त करो।'

(३७) स्वकृतं विद्यते दुःखं, स्वकृतं विद्यते सुखम्।
अबोधिनाऽर्जितं दुःखं, बोधिना हि प्रलीयते।।

दुःख अपना किया हुआ होता है और सुख भी अपना किया हुआ होता है। अबोधि से दुःख अर्जित होता है और बोधि से उसका विलय होता है।

भगवान् महावीर ने कहा–

'अन्नाणी किं काहिइ, किं वा नाहीइ छेयपावगं।'

अज्ञानी को श्रेय ओर अश्रेय का पता नहीं होता। वह बेचारा है, दया का पात्र है, वह क्या करेगा? कैसे पार करेगा भवसागर को? यह करुण का परम वचन है। बुद्ध ने कहा है–'भिक्षुओ! सब मलों में अज्ञान परम मल है। इस मल को धो डालो और पवित्र हो जाओ।' गीता में कहा है–'अज्ञानेनावृत्तं ज्ञानं, तेन मुह्यन्ति जन्तवः'– प्राणियों का ज्ञान अज्ञान से आच्छन्न है, इसलिए वे मूढ़ होते हैं।

अज्ञान पर सब संतों ने प्रहार किया है। सारा दुःख अज्ञान से अर्जित है। मनुष्य को पता नहीं है कि कैसे वह दुःख का संग्रह कर रहा है। दुःख सबको अप्रिय है। कोई नहीं चाहता है कि दुःख मिले किंतु आश्चर्य है कि जाने, अनजाने सब दुःख-नरक में उतर रहे हैं। दुःख ने मनुष्य को नहीं पकड़ा है, किंतु मनुष्य ने ही उसे पकड़ रखा है। जिस दिन यह समझ में आ जाएगा, आदमी उसे छोड़ भी सकेगा। दुःखी व्यक्ति ही दूसरों को सताने का प्रयत्न करता है। महावीर, बुद्ध आदि संतों ने किसी को नहीं सताया। क्योंकि वे परम सुख में थे। जब तक आप दुःखी हैं, दूसरों को कष्ट देने से नहीं चूकेंगे। आध्यात्मिक होने की शर्त है–आप सुखी बन जाएँ, दूसरों की चिंता छोड़ दीजिए। सुख उतर जाएगा। सुख के लिए सुख का ज्ञान अपेक्षित है। जैसे ही ज्ञान की किरण उतरेगी अनंत जन्मों का संगृहीत दुःख एक क्षण में विदा हो जाएगा। मैं दुःख किसी से लूँगा ही नहीं तो कौन मुझे दुःख देगा? मैं हर क्षण में प्रफुल्लित मुस्कराता रहूँगा। जो कुछ भी मेरे लिए है, वह सब मंगल रूप है।' ऐसे व्यक्ति को कौन दुःखी कर सकता है?

(क्रमशः)

अवबोध

मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'

कर्म बोध

अवस्था व समवाय

प्रश्न ११ : क्या फल प्राप्ति में द्रव्य, क्षेत्र, काल आदि की कोई भूमिका है?

उत्तर : कर्म के विपाकोदय से होने वाली फल प्राप्ति में द्रव्य, क्षेत्र, काल व भाव की अनुकूलता जरूरी है। प्रदेशोदय में फल प्राप्ति की बाहर अनुभूति नहीं होती, अतः प्रदेशोदय में उनकी कोई भूमिका नहीं है।

प्रश्न १२ : क्या कर्म के अशुभ फल को रोका जा सकता है?

उत्तर : जप, ध्यान आदि से अशुभ फल को रोका जा सकता है। जप आदि से कर्म-निर्जरा होती है। जब कर्मों का निर्जरण हो जाता है, तब कर्मों के अशुभ फल देने की बात स्वतः समाप्त हो जाती है।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

आचार्य महाश्रमण

जैन जीवनशैली

अणुव्रत

किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति है उसका चरित्र। राष्ट्र का चरित्र राष्ट्र की जनता पर निर्भर है। जनता का चरित्र-बल जितना मजबूत होता है, राष्ट्र उतना ही ऊँचा उठता है। सैन्यबल, संख्याबल और अर्थबल भी राष्ट्र के विकास में निमित्त बनते हैं। पर मूल तत्त्व है चरित्र-बल। चरित्र-बल के अभाव में दूसरे-दूसरे बल अपने आप क्षीण होने लगते हैं। इस सत्य को समझने वाला व्यक्ति चरित्र का मूल्यांकन कर सकता है।

बीसवीं सदी आधी पूरी होने को थी। उस समय भारत सदियों से राजनीतिक दासता से मुक्त हुआ। देश की जनता प्रसन्न हुई। पर स्वतंत्रता आंदोलन के समय उसमें देशप्रेम की जो जीवंत लहर आई थी, वह नीचे दबने लगी। स्वार्थों की पूर्ति की आकांक्षा और सुविधाभोगी मानसिकता बढ़ी। पर राष्ट्रीय चरित्र निर्माण की बात दिमाग से निकलती गई। उस समय आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन काप्रवर्तन किया। अंधकार में प्रकाश की एम नई किरण का आविर्भाव हुआ।

अणु का अर्थ है छोटा और व्रत का अर्थ है नियम। अणुव्रत अर्थात् छोटे-छोटे नियम। मानव जीवन की न्यूनतम आचार-संहिता। मनुष्यता का व्यावहारिक मानदंड। धर्म का असांप्रदायिक रूप। मनुष्य मात्र को संयम, सादगी, नैतिकता और मानवता की ओर बढ़ने की प्रेरणा। जाति, धर्म, रंग, लिंग, वर्ण, भाषा, प्रांत आदि सभी भेदभावों से ऊपर एक व्यापक दृष्टिकोण। भ्रष्टाचार के तीखे तीरों से बचाने वाला सुरक्षा कवच। अणुबम से होने वाले ध्वंस के बीच आत्मनिर्माण का अमाघ मंत्र। २ मार्च, १९४९, सरदारशहर में अणुव्रत की आवाज उठी। आज वह इस छोर से उर छोर तक प्रतिध्वनित होती हुई देश की सीमाओं को पार कर विश्वमानव का ध्यान खींचने में सफल हो रही है।

धर्म के दो रूप हैं–उपासना और चरित्र। उपासना के अनेक रूप हैं जबकि चरित्र का एक ही रूप है। भिन्न-भिन्न संप्रदायों में आस्था रखने वाले व्यक्ति अपनी-अपनी आस्था के अनुसार उपासना करते हैं। कोई मंदिर में जाकर पूजा करते हैं। कोई मस्जिद में जाकर नमाज पढ़ते हैं। कोई चर्च में प्रार्थना करते हैं। कोई गुरुद्वारा में ग्रंथ साहब का पाठ करते हैं। उपासना के और भी अनेक रूप हैं। अणुव्रत का किसी भी उपासना विधि में कोई हस्तक्षेत्र नहीं है। उसे इस बात से भी कोई सरोकार नहीं है कि व्यक्ति किस धर्म को मानता है और किस व्यक्ति को अपना गुरु या मार्गदर्शक मानता है। वह इतनी ही अपेक्षा रखता है कि उस व्यक्ति का जीवन प्रामाणिक हो, पवित्र हो और समस्या पैदा करने वाला न हो।

अणुव्रत की अपनी आचार-संहिता है। उसका पालन करने वाला व्यक्ति अणुव्रती कहलाता है।

अणुव्रत हृदय-परिवर्तन का सिद्धांत है। दूसरे शब्दों में यह अपने पर अपना अनुशासन है। इसे धर्म के रूप में व्याख्यायित किया जाए तो वह वर्ण, जाति और संप्रदाय के कटघरे से मुक्त धर्म है। छोटे-छोटे संकल्प और जीवन-परिवर्तन का छोटा-सा उद्देश्य। इसके मूलभूत संकल्प ग्यारह हैं। इसके साथ प्रत्येक वर्ग से संबंधित कुछ नियम और है। वे नियम विद्यार्थी, अध्यापक, व्यापारी, राज्यकर्मचारी, डॉक्टर आदि सभी व्यक्तियों के लिए है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि अणुव्रत मानव धर्म है। मानवीय मूल्यों का संरक्षक और परिवर्धक है। इसके द्वारा मनुष्य के जीवन में चरित्र और अनुशासन का विकास हो सकता है। मुख्य रूप से यह जीवन-निर्माण का उपक्रम है। प्रासंगिक रूप से सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान है।

(क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
28 अगस्त - 03 सितम्बर 2023

धर्म के अनेक आयाम है। समता को आत्मसात् कर लेने से उन सबकी आराधना सहज हो जाती है।
-आचार्यश्री महाश्रमण

स्वरांजलि प्रतियोगिता का आयोजन

विजयनगर

मुनि दीपकुमारजी के पावन सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् एवं तेरापंथ महिला मंडल के संयुक्त तत्वावधान में धार्मिक गीतों पर आधारित 'स्वरांजलि' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता चार राउंड में हुई।

मुनि दीपकुमारजी ने कहा- 'ऐसी प्रतियोगिताएं ज्ञान का संवर्धन करती है।' इस प्रतियोगिता की संयोजना तेमम उपाध्यक्ष बरखा पुगलिया, अभिषेक कावड़िया एवं विक्रम बोहरा ने की। सभी प्रतियोगिओं को पुरस्कृत किया गया। प्रतियोगिता में यशवंतपुर तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा ने भी अपनी टीम के साथ भाग लिया। कार्यक्रम में अभातेमम से मधु कटारिया, तेमम अध्यक्ष मंजू गादिया, मंत्री आशा कोठारी, तेयुप अध्यक्ष राकेश पोकरणा तथा गांधीनगर तेमम अध्यक्षा की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में भाइयों और बहिनों की उपस्थिति काफी अच्छी संख्या में रही।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ स्तुति संध्या

रायपुर

समणी निर्देशिका डॉ. ज्योतिप्रज्ञाजी, समणी डॉ. मानसप्रज्ञाजी के सान्निध्य में तेरापंथ अमोलक भवन, रायपुर में तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर द्वारा आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की मासिक पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में आचार्यश्री महाप्रज्ञ स्तुति संध्या का आयोजन रात्रि में किया गया। संस्थागत प्रस्तुति में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ किशोर मंडल, तेरापंथ कन्या मंडल व रायपुर ज्ञानशाला द्वारा सुमधुर भावांजलि दी गई। संचालन गौरव दुगड़ व आभार वीरेंद्र डागा ने किया। उपस्थित श्रद्धालुओं ने भी अपने पुरुषार्थ के माध्यम से पुरस्कार प्राप्त किया।

250 प्रत्याख्यान का अदभुत तोहफा

आमेट

साध्वी कीर्तिलताजी के पावन सान्निध्य में अध्यात्म की सुंदर सरिता प्रवाहित हो रही है। छोटी-मोटी तपस्या कभी अठाई, कभी नौ, कभी ग्यारह की तपस्या का अभिनंदन होता है तो कभी पचरंगी उपवास की सामायिक, त्याग एवं जप आदि से पावस में अभिनव रंग ला रहे हैं। साध्वीश्रीजी ने श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी के दीक्षा की अर्धसदी वर्ष के उपलक्ष में एक दिन में एक साथ २५० प्रत्याख्यान का अद्भुत तोहफा समर्पित किया, जो सबके लिए विशेष प्रेरणादायी रहा। इस प्रत्याख्यान के अद्भुत गुलदस्ते में एक साथ २५० व्यक्ति सम्मिलित थे, जिसमें २५ उपवास, २५ आयम्बिल, २५ एकाशन, २५ एकलठाणा, २५ नीवीं, २५ चरम प्रत्याख्यान, २५ नवकारसी, २५ पोरसी व २५ दो पोरसी, २५ अभिग्रह इस प्रकार से २५० व्यक्ति सम्मिलित हुए, जिसमें छोटे बच्चों व वयोवृद्ध श्रावकों ने भाग लिया। साध्वीश्रीजी ने सबके उत्साह को उत्साहित करते हुए साधुवाद प्रदान किया।

तपोभिनन्दन कार्यक्रम का आयोजन

पर्वत पाटिया

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के तत्वावधान में साध्वी हिमश्रीजी के सानिध्य में तपोभिनन्दन कार्यक्रम रखा गया। साध्वीश्रीजी ने अपने उद्बोधन में जैन धर्म में तपस्या के महत्व के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि तपस्या करना कोई सहज काम नहीं है। तपस्वी भाई-बहिनों ने तपस्या करके बहुत ही मनोबल और साहस का परिचय दिया है। तपस्या करके अपने कर्मों की निर्जरा की जाती है। साध्वीश्रीजी ने तपस्या करने की प्रेरणा दी।

सभी साध्वीवृंद ने गीतिका के द्वारा तपस्या की अनुमोदना दी। तपस्या के क्रम में पंकज बोथरा के १५ एवं अन्य तपस्वियों ने अपने तप के प्रत्याख्यान किए। तप अभिनन्दन के क्रम में तेरापंथी सभा उपाध्यक्ष रणजीत घीया व तेयुप मंत्री पवन कुमार बुच्चा व तेरापंथ महिला मंडल मंत्री चेष्टा ने अपने भावों के माध्यम से तप की अनुमोदना की।

सभी सभा संस्थाओं द्वारा साहित्य के द्वारा तपस्वी भाई बहनों का सम्मान किया गया।

लोगस्स साधना अनुष्ठान का आयोजन

सिलीगुड़ी

मुनि प्रशांतकुमारजी एवं मुनि कुमुदकुमारजी के सान्निध्य में लोगस्स साधना अनुष्ठान अभिनव प्रयोग कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुनि प्रशांतकुमारजी ने इस अवसर पर कहा कि लोगस्स पाठ जैन धर्म का बहुत ही चमत्कारी और प्रभावशाली पाठ है। यह जन-जन में इसलिए प्रचलित हो पाया है कि इसका जप करने से अनेकानेक विघ्न बाधाएं दूर हो जाती है। एक मंगलमय वातावरण का निर्माण होता है। लोगस्स की साधना करने की अनेक विधियां प्रचलित हैं। इसकी साधना करने से कार्य में सफलता और सिद्धि प्राप्त होती है। मानसिक, शारीरिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। लोगस्स में चौबीस तीर्थंकरों का स्मरण किया जाता है। उनको याद करके अपने प्रति मंगलकामना की जाती है अपने आरोग्य के लिए, अपनी सिद्धि के लिए। जैसे तीर्थंकर के अंदर तेजस्विता है, ओजस्विता है, निर्मलता है, पवित्रता है, इसी तरह कामना की जाती है कि मैं भी तीर्थंकर की तरह ओजस्वी बनूं, तेजस्वी बनूं, निर्मल बनूं, आरोग्य को प्राप्त करुं और मुझे भी सिद्धि की प्राप्ति हो, ऐसी कामना इस लोगस्स के माध्यम से की जाती है। चौबीस तीर्थंकरों में एक अलग ही शक्ति होती है। उन पवित्र आत्माओं ने आत्मसाधना कर सिद्धि को प्राप्त किया, मोक्ष का परमानन्द प्राप्त किया। उनका स्मरण करने से स्वयं की आत्मा में शुद्धि आए, भाव में पवित्रता आए, विचारों में निर्मलता आए, ऐसी भावना एवं कामना की जाती है।

चौबीस तीर्थंकर के माध्यम से व्यक्ति अपनी आत्म साधना करता है। अब तक अनंत तीर्थंकर और सिद्धात्माएं हो चुकी हैं। अनंत सर्वज्ञ, केवलज्ञानी हो चुके हैं। उन सभी की दिव्य पोजिटिव एनर्जी इसी ब्रह्माण्ड में विद्यमान है। देवी शक्तियों से भी अनंत गुणा अधिक पोजिटिविटी, पवित्रता तीर्थंकर की एनर्जी में होती है। उस दिव्य और पोजिटिव एनर्जी को ग्रहण करने का एक अभिनव प्रयोग मुनिश्री ने करवाया। इसके पश्चात् शरीर में स्थित सात चक्रों पर लोगस्स के एक-एक पद्य का उच्चारण और सामूहिक मंत्र जप करवाया। सभी चक्रों पर अलग-अलग मंत्रों के सामूहिक जप से पूरा वातावरण ऊर्जामय बन गया।

सामुहिक आयंबिल तप का विराट आयोजन

सिकंदराबाद

तेरापंथ भवन, सिकंदराबाद में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित तेरापंथ महिला मंडल, हैदराबाद के तत्वाधान में सामूहिक आयंबिल तप का विराट आयोजन हुआ। साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञाजी ने उपस्थित साधक-साधिकाओं को उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा- 'अध्यात्म साधना तप-त्याग प्रधान होती है। जैन परंपरा में आयंबिल साधना का महत्वपूर्ण स्थान है। इतिहास में ऐसे अनेकों प्रसंग हैं, जहां आयंबिल से विघ्नों का हरण हुआ है। शांति और शक्ति, आनंद का रस साधना से प्रस्फुटन हुआ है। विशिष्ट आध्यात्मिक शक्ति जागरण का आयंबिल तप महत्वपूर्ण अनुष्ठान है। इस पवित्र अनुष्ठान से अनिर्वचनीय ऊर्जा की अनुभूति होती है। तेजस शक्ति बढ़ाने के लिए आयंबिल सशक्त साधना है। इस तप से अनासक्त भाव पुष्ट होते हैं। स्वाद विजय का यह प्रयोग आत्मशक्ति बढ़ाता है। वैराग्य चेतना जागृत करता है।'

साध्वीश्रीजी की प्रेरणा और तेरापंथ महिला मंडल के श्रमयुत् प्रयास से लगभग २०० व्यक्तियों ने इस अनुष्ठान और तप का आनंद लिया। साध्वीश्रीजी द्वारा परिषद् को बीज मंत्रों एवं विभिन्न प्रभावक जैन मंत्रों का अनुष्ठान करवाया गया। अनुष्ठानकर्ताओं ने अनुभवगम्य ऊर्जा का अनुभव भी किया। साध्वीश्रीजी ने कहा- 'प्रबल संकल्प के साथ ही त्याग के राजपथ पर बढ़ा जा सकता है। भगवान महावीर की वाणी 'पणया वीरा महावीहं' अर्थात जो वीर होते हैं, वही महापथ पर चल सकते हैं। आयंबिल रोग निवारक साधना है, संकट निवारक साधना है। हर तप में अलग-अलग रहस्य छुपे हुए हैं। आयंबिल साधना से भीतर की सक्रियता की अनुभूति होती है। आयंबिल इंद्रिय निग्रह के साथ जुड़ा तप है।'

प्रभावती जोन की बहनों ने संकल्प गीत 'आओ बहनों, जागो बहनों' का सामूहिक संगान किया। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष कविता आच्छा ने संपूर्ण संभागियों का स्वागत किया, साध्वीश्रीजी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। तेमम अध्यक्ष कविता आच्छा, मंत्री सुशीला मोदी, संयोजिका प्रभा दूगड़ एवं श्रीमती सरला भूतोड़िया का इस अनुष्ठान हेतु सराहनीय श्रम रहा। साध्वीश्रीजी ने एक साथ आयंबिल-तप प्रत्याख्यान करवाया।

प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

शाहदरा, दिल्ली

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में शाहदरा सभा के तत्वावधान में प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन हुआ। प्रेक्षा-प्रशिक्षक रमेश कांडपाल ने प्रशिक्षण दिया।

साध्वी अणिमाश्रीजी ने उद्बोधन में कहा कि आनंद व शांति रूपी खजाने को प्राप्त करने की चाबी है- प्रेक्षाध्यान। ध्यान निज की खोज व निज की पहचान का पथ है। ध्यान आरोग्य लाभ का महामंत्र है। ध्यान के द्वारा व्यक्ति अपने भीतर ज्ञान की गंगा प्रवाहित कर सकता है। आधि, व्याधि और उपाधि के उपशमन का अमोघ मंत्र है- प्रेक्षाध्यान। प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों के द्वारा व्यक्ति तनावमुक्त जीवन जी सकता है।

साध्वीश्री ने आगे कहा कि आचार्य महाप्रज्ञजी द्वारा अन्वेषित प्रेक्षाध्यान पद्धति के प्रयोगों से व्यक्ति जीवन के सभी क्षेत्रों में सफल हो सकता है। जरूरत है व्यक्ति अपनी जीवन रूपी प्रयोगशाला में इसे प्रायोगिक रूप देकर जीवन को सार्थक बनाए।

मुख्य प्रशिक्षक रमेश कांडपाल ने कहा- 'आहार और स्वास्थ्य का गहरा संबंध है। जैसा भोजन करेंगे वैसा स्राव होगा। जैसा स्राव होगा, वैसा भाव होगा। जैसा भाव, वैसा स्वभाव, जैसा स्वभाव वैसा व्यवहार होगा। इसलिए भोजन को सुधारें, व्यवहार अपने आप प्रभावशाली बनेगा।' प्रशिक्षक महोदय द्वारा बड़े ही रोचक ढ़ंग से आसन-प्राणायाम एवं कायोत्सर्ग का प्रशिक्षण दिया गया।

साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने कार्यक्रम का संचालन किया। चन्द्रकला लुणिया, संतोष सेठिया, निर्मला बोथरा, सुमन सिंघी ने संयोजिकाओं के रूप में अच्छा श्रम किया। प्रेक्षावाहिनी की बहनों ने मंगल संगान किया।

विघ्न बाधाओं को व्यक्ति आत्मबल व मनोबल से स्वयं पर हावी न होने दे।

-आचार्यश्री महाश्रमण

पंचरंगी तप अभिनंदन कार्यक्रम का आयोजन

देवगढ़

साध्वी कार्तिकयशाजी के सान्निध्य मे पंचरंगी तप अभिनंदन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। साध्वीश्रीजी ने अपने उद्‌बोधन में फरमाया- 'भारतीय संस्कृति में साध्य को महत्व दिया गया है। जैन धर्म का अंतिम साध्य है मोक्ष को प्राप्त करना। साध्य को तभी प्राप्त किया जा सकता है जब साधन सक्षम हो। ज्ञान, दर्शन, चारित्र व तप यह चार साधन हैं, जिनके माध्यम से व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।' सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन तप के बारे में साध्वीश्रीजी ने कहा कि देवगढ़वासियों ने खूब मनोबल से तप के महत्व को समझा है और त्याग प्रत्याख्यान से इस पंचरंगी तप को सफल बनाया है।

देवगढ़ में साध्वी कार्तिकयशाजी की प्रेरणा से प्रारंभ से ही अनेक तपस्याओं का सिलसिला जारी है। इसी क्रम में साध्वीश्रीजी ने एक पंचरंगी तप का आह्वान किया था, लेकिन देखते ही देखते लोगों का उत्साह ऐसा बढ़ा कि आस्था दो पंचरंगियों में बदल गई। लगभग 75 भाई-बहनों ने इस महायज्ञ में आहुति देकर इसे सफल बनाया है। तप अनुमोदना की शृंखला में विमल बोहरा, उत्तमचंद सुखलेचा, विकास मेहता, बसंतीलाल आच्छा, रेखा छाजेड़ ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वीवृंद द्वारा पंचरंगी तप का अनुमोदन किया गया। युवती व कन्या मंडल ने साध्वीवृंद के श्रम को लघु नाटिका द्वारा दर्शाया। संचालन अमिता पोखरना ने किया।

सामूहिक एकाशन तप का आयोजन

पुर

तेरापंथ भवन में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा आयोजित 'सामूहिक एकाशन तप' के अवसर पर तपस्वी मुनि प्रतीककुमारजी ने कहा- 'जैन धर्म में तप का विशेष महत्व है। तप का असली अर्थ है- त्याग। कई लोग अपनी मांगें मनवाने के लिए अनशन या भूख हड़ताल करते हैं, वे सभी सांसारिक आकांक्षाओं को लेकर कार्य करते हैं। उनका उद्‌देश्य कर्म-निर्जरा का नहीं होता है, लेकिन जैन धर्म में सांसारिक आंकाक्षाओं रहित कर्म निर्जरा के लिए तपस्या की जाती है। बिना किसी लाभ-हानि की कामना के लिए, केवल अपने उत्थान के लिए तपस्या करते हैं। तपस्या शरीर बल से नहीं आत्म बल से की जाती है। तपस्या में स्वयं से लड़ना पड़ता है। तपस्या हमारे मन को पवित्र बनाती है। तप मानव का असली आभूषण है।' उन्होंने कहा कि परीक्षा सच्चे व्यक्ति की होती है। परीक्षा भगवान महावीर की भी हुई पर उन्होंने समता और धैर्य से काम लिया। तपस्या में भी कुछ तकलीफ आ सकती है पर जिसका आत्म बल मजबूत होता है वही तपस्या करता है। तपस्या अकेले भी की जा सकती और सामूहिक भी की जा सकती है। अनेक प्रकार के सामूहिक तप करवाए जाते हैं, जिसमे एक है- 'एकाशन'।

मुनिश्री ने सामूहिक एकाशन प्रारंभ कराने से पूर्व मंत्र अनुष्ठान करवाया, फिर सभी एकाशन करने वाले तपस्वियों को सामूहिक प्रत्याख्यान करवाया। पुर समाज के इतिहास में पहली बार 'आठ वर्ष से लेकर अठ्यासी वर्ष' तक के १७५ व्यक्तियों ने 'सामूहिक एकाशन तप' किया।

मुनि पदमकुमारजी एवं मुनि मोक्षकुमारजी के निर्देशन में सभी ने इस सामूहिक एकाशन तप में प्रसन्न भाव से लाभ लिया एवं तेरापंथ युवक परिषद् की संपूर्ण टीम ने मुनिद्वय की विशेष प्रेरणा से इस आयोजन को सफल बनाने में पूर्ण श्रम किया। तेरापंथ महिला मंडल की ओर से सामूहिक एकाशन तप के निर्जरार्थियों के प्रति तथा सभी एकाशन तपस्वियों के प्रति मंगलकामना व आभार ज्ञापित किया गया।

एक्सप्लोर-द पावर विदिन का आयोजन

गांधीनगर-बैंगलोर

तेरापंथ युवक परिषद्, बैंगलोर के तत्वावधान में मुनि हिमांशुकुमारजी के सान्निध्य में 'एक्सप्लोर-द पावर विदिन' का आयोजन तेरापंथ भवन, गांधीनगर में किया गया। मुनि हिमांशुकुमारजी के मंगल मंत्रोच्चार के साथ कार्यशाला का शुभारंभ किया गया।

मुनि हेमंतकुमारजी ने अपने प्रेरक उद्‌बोधन में सफल जीवन एवं जीवन में सफलता के अंतर को उदाहरणों के माध्यम से प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि आज हर व्यक्ति आलस्य, खालीपन, डर और चिंता से ग्रसित है। इन सब से मुक्ति पाने के लिए व्यक्ति को स्वयं के अंदर से परिवर्तन करना अपेक्षित है। किसी की प्रेरणा से व्यक्ति केवल कुछ कदम चल सकता है पर यदि व्यक्ति खुद की अंतः प्रेरणा से चलने का प्रयत्न करे तो मंजिल तक पहुंच सकता है। इसके लिए मनुष्य को अपने अंदर छिपी शक्तियों को पहचानना होता है, जो उसके जीवन को सफल बना सकें। मुनिश्री ने आगे सफलतम जीवन के लिए अंग्रेजी भाषा के तीन सूत्रों थिंक बिग, स्टार्ट स्मॉल एवं स्केल कंसिस्टेंटली पर विशेष चर्चा की। कार्यशाला में लगभग १०० संभागियों ने भाग लिया। जंबल वर्ड्स एवं लोगो क्विज के विजेताओं को तेयुप अध्यक्ष रजत बैद, उपाध्यक्ष विवेक मरोठी एवं मंत्री रोहित कोठारी ने पुरस्कारों से सम्मानित किया। संयोजक राकेश कुमार चोरड़िया ने विशेष श्रम नियोजित किया। उपाध्यक्ष आलोक कुंडलिया, सहमंत्री संदीप चोपड़ा, कोषाध्यक्ष तरुण पटावरी, विमल धारीवाल, मोहित सुराणा का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यशाला में प्रदीप चौपड़ा, मनीष भंसाली, प्रकाश सालेचा, पंकज भंडारी, अमित भंडारी आदि कार्यसमिति सदस्य एवं साधारण सदस्यों के साथ श्रावक-श्राविका समाज की उपस्थिति रही।

पुनरावर्तन कार्यशाला का आयोजन

सिकंदराबाद

तेरापंथ भवन सिकन्दराबाद में साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित एवं तेरापंथ महिला मंडल, हैदराबाद के तत्वावधान में पुरानी ढ़ालों की पुनरावर्तन कार्यशाला आयोजित हुई।

कार्यशाला में केन्द्र निर्देशित मुणिन्द मोरा, भिक्षु म्हारै प्रगट्या जी भरत खेतर में, जम्बू कहयो मान ले, विघ्नहरण एवं भावै भावना इन पांच गीतिकाओं का पुनरावर्तन किया गया।

उपस्थित लगभग १५० से अधिक बहनों ने सामायिकपूर्वक ढ़ालों का स्वाध्याय किया। कार्यसमिति की लगभग सभी बहनों ने इस कार्यशाला में संभागिता दर्ज की। मुख्य संयोजिका रीटा सुराणा एवं प्रभा दुगड़ ने सभी बहनों को एक्टिव रहने की प्रेरणा दी।

ढ़ालों के पुनरावर्तन के पश्चात उनसे संबंधित प्रश्नोत्तर का सिलसिला भी चला। कार्यशाला से पूर्व साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञाजी ने अपने प्रवचन में कहा- 'जैन परम्परा में ज्ञान के साथ दान का भी विशेष महत्व रहा है। शुद्ध दान वह होता है जिसमें दाता ,देय और गृहिता तीनों शुद्ध हों। विशुद्ध दान से कर्मों की निर्जरा होती है।' इस संदर्भ में उन्होंने ऐतिहासिक शालिभद्र के संदर्भ का विवेचन किया।

साध्वी सुदर्शनप्रभाजी, साध्वी सिद्धियशाजी एवं साध्वी चैतन्यप्रभाजी ने तप-अनुमोदन गीत प्रस्तुत किया। तेममं अध्यक्ष कविता आच्छा ने कहा ऐसी ज्ञानवर्धक कार्यशालाओं से हमें जीवन निर्माण के सूत्र मिलते हैं। अध्यात्म की ओर गति करने की प्रेरणा मिलती है। उन्होंने केसरिया परिधान में सज्जित संपूर्ण महिला मंडल की सदस्याओं का स्वागत किया। मंडल मंत्री सुशीला मोदी ने आभार जताया।

प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान

भीलवाड़ा

अणुव्रत विश्व भारती के निर्देशन में विद्यालयों में प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान का नियमित क्रम अणुव्रत समिति, भीलवाड़ा द्वारा नियमित रूप से चलाया जा रहा है। इसी क्रम में स्प्रिंग डेल्स इंग्लिश मीडियम स्कूल, आजाद नगर, भीलवाड़ा में कक्षा ३ से १० तक के बच्चों को प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान का कुशलता से प्रशिक्षण दिया गया। अणुव्रत समिति मंत्री रेणु चौरड़िया द्वारा बच्चों को गर्दन की क्रियाएं, ताड़ासन, कोणासन, पादहस्तासन, महाप्राण ध्वनि एवं विभिन्न संकल्पों के प्रयोगों द्वारा विद्यार्थियों को लाभान्वित किया गया।

अणुव्रत समिति अध्यक्ष अभिषेक कोठारी द्वारा प्रश्नोत्तरी के माध्यम से विद्यार्थियों की एकाग्रता को जांचा गया साथ ही पारितोषिक भी दिया गया। उनके द्वारा स्प्रिंग डेल्स इंग्लिश मीडियम स्कूल की प्रधानाध्यापिका श्रद्धाजी को बाल पीढ़ी के सर्वांगीण संतुलित विकास की दृष्टि से अणुव्रत बालोदय एजुकेशनल टूर की जानकारी दी एवं राजसमंद में स्थित किडजोन का विवरण पत्र भेंट किया। इस कार्यक्रम में स्कूल स्टाफ की उपस्थिति ने बच्चों का उत्साह बढ़ाया।

विशाल प्रतिक्रमण कार्यशाला

नोखा

बहुश्रुत एवं शासन गौरव साध्वी राजीमतिजी के पावन सान्निध्य में तेरापंथ भवन में प्रतिक्रमण कार्यशाला आयोजित हुई। शासन गौरव साध्वी राजीमतिजी ने प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा- 'प्रतिक्रमण करना निर्जरा है। आत्म चिंतन कर आत्मा की मलिनता के कचरे एवं गलत विचारों को प्रतिक्रमण की बुहारी से साफ करें। सम्पूर्ण जीवन की सफलता का सूत्र प्रतिक्रमण है। आराधक बनें, विराधक न बनें। क्रोध, मान, माया, लोभ को कम करने का प्रयास करें। अनासक्त बनने का प्रयास करें। त्याग व संयम में धर्म है, भोग में पाप है, इस सिद्धांत को समझें व आत्मसात करें। भाव शुद्ध रखें, आत्मा को हल्की रखें। अहंकार ममकार पतन का कारण है। आत्म चिंतन कर प्रायश्चित करना ही प्रतिक्रमण है।'

इस अवसर पर उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक सूर्यप्रकाश सामसुखा ने कहा कि पीछे मुड़कर देखना, गलती का परिष्कार करना, हिंसा की आलोचना करना, बारह से भीतर आना, अतिक्रमण पर नियंत्रण का निवारण ही प्रतिक्रमण है। मानव गलती करता है, झूठ बोलता है, छल, कपट करता है, उसका प्रायश्चित्त करना, स्वीकार करना ही प्रतिक्रमण है। शांति का जीवन ही व्यक्ति को सुखी बनाता है। व्यक्ति को पाक्षिक, मासिक, वार्षिक प्रतिक्रमण कर क्षमायाचना करनी चाहिये।

तेरापंथ महिला मंडल की बहिनों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। तेरापंथी सभा उपाध्यक्ष इन्द्रचन्द्र बैद 'कवि', तेमम अध्यक्षा सुमन मरोठी ने अपने भाव व्यक्त किये। कुशल संचालन करते हुए तेरापंथी सभा मंत्री लाभचंद छाजेड़ व उपासक अनुराग बैद ने प्रतिक्रमण कार्यशाला को महत्वपूर्ण एवं उपयोगी बताया।

तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल द्वारा सूर्यप्रकाश सामसुखा का साहित्य से सम्मान किया गया। कार्यशाला में तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष गजेन्द्र पारख, मंत्री अरिहंत संकलेचा सहित अच्छी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहे।

दूसरे कोई जाने या न जाने, तुम अपने आचार को निर्मल रखो, तुम्हारा कल्याण हो जाएगा।

-आचार्यश्री महाश्रमण

सम्बन्धों को मधुर कैसे बनाएं दम्पति शिविर

सिवानी

शासनश्री साध्वी कुंथुश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा के तत्वावधान में तेरापंथ भवन में दम्पति शिविर का आयोजन किया गया। मंगलाचरण महिला मंडल की बहिनों ने किया।

साध्वी कुंथुश्रीजी ने अपने उद्बोधन में उपस्थित जन समूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि दम्पति का अर्थ पति-पत्नी का जोड़ा। जोड़ा भाई-बहिन का भी होता है, सास-बहु का देरानी-जेठानी का भी होता है। यहां पति-पत्नी के जोड़े की चर्चा हो रही है। एक चक्के से गाड़ी नहीं चल सकती। एक तार से बल्ब नहीं जलता, एक हाथ से ताली नहीं बजती। अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। एक व्यक्ति से सृष्टि का संचालन नहीं होता। अकेले पुरूष या अकेली स्त्री से न परिवार होता है न समाज होता है। जहां देह है, वहां संबंध होता है। जहां जोड़ पति-पत्नी का होता है, वहां तु-तु, मैं-मैं भी हो सकती है। प्रश्न है संबंधों को मधुर कैसे बनायें, साथी के साथ कैसे जीयें। दाम्पत्य जीवन सुखी कैसे बने उसके कुछ टिप्स प्रस्तुत करते हुए साध्वीश्रीजी ने कहा कि पहला सूत्र अनाग्रह चेतना का विकास, दूसरा सूत्र संवेदनशीलता। दूसरे के दुःख-दर्द में सहानुभूति होनी चाहिये। तीसरा सूत्र सहनशीलता। एक दूसरे को सहन करें एवं चौथा सूत्र परस्पर संवादिता। एक दूसरे के प्रति भरोसा, समय पर सहयोग एक दूसरे की रूचि भावना का सम्मान करना। इन सूत्रों को अपनाकर दाम्पत्य जीवन मधुर व सरस बनाया जा सकता है।

साध्वी सुमंगलाश्रीजी ने सकारात्मक दृष्टिकोण, कुशल व्यवहार व चरित्रनिष्ठ विषय पर सुंदर प्रस्तुतीकरण किया। साध्वी सुलमयशाजी एवं साध्वी सम्बोधयशाजी ने कार्यक्रम की तैयारी करवाने में अथक परिश्रम किया। कन्याओं ने रोचक प्रेरक एकांकी के द्वारा श्रोताओं को आकर्षित किया। सभाध्यक्ष रतनलाल जैन, अमित जैन, संजीव जैन, सुशील जैन, राजेश जैन, गोकुल जैन आदि ने कार्यक्रम का सफल बनाने में पूर्ण सहयोग किया। कार्यक्रम का संचालन प्रिया जैन ने किया।

सम्यक दर्शन कार्यशाला का आयोजन

चेन्नई

साध्वी लावण्यश्रीजी के सान्निध्य में सम्यक दर्शन कार्यशाला का शुभारंभ अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेयुप चेन्नई के तत्वावधान में हुआ। साध्वीश्रीजी ने सम्यक दर्शन का महत्व समझाते हुए कहा कि जैन धर्म आत्मवादी धर्म है। भगवान पार्श्व के शिष्य कुमारश्रमण केशी ७०० मील का विहार कर के नास्तिक राजा प्रदेशी को आस्तिक बनाने के लिए पधारे। प्रस्तुत आगम कथानक में मुख्य पात्र है- कुमारश्रमण केशी, राजा प्रदेशी, रानी सूर्यकान्ता और मंत्री। शरीर और आत्मा का भेद बताने के लिए विशेष रूप से इस कार्यशाला का आयोजन किया गया है। देव, गुरु, धर्म का महत्व समझाते हुए साध्वी श्री ने फरमाया कि अरहंत मेरे देव, यावज्जीवन शुद्ध साधुपन पालने वाले मेरे गुरु हैं। जिन भगवान ने जो धर्म का प्रतिपादन किया है, मैं ऐसे सम्यक्त्व को स्वीकार करता हूं। साध्वी दर्शितप्रभाजी ने कहा- 'हम आत्मा को मानते हैं, किन्तु शरीर की सारसंभाल ज्यादा करते हैं। हमारे शरीर को कोई आंच न आए, शरीर से सुन्दर दिखे। शरीर की सारसंभाल करें किन्तु हमारा जैन दर्शन इस बात को स्वीकार करता है कि हम अपनी आत्मा का ख्याल रखें, उसे भारी न बनने दें।' १५ दिन तक चलने वाली इस कार्यशाला में अनेकों श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया।

किशोर व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन

छोटी खाटू

साध्वीश्री संघप्रभाजी के पावन सान्निध्य में 'किशोर व्यक्तित्व विकास कार्यशाला' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण विजय गीत द्वारा दीपक बेताला एवं तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। साध्वीश्री संघप्रभाजी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा- 'सफलताओं को हासिल करने के लिए आवश्यकता है किशोर प्रतिबद्धता, प्रतिस्पर्धा एवं प्रतिक्रियाएं बचाकर संप्रबंधन, समय प्रबंधन के द्वारा सही दिशा का निर्धारण कर आगे बढ़ें। कामयाबियों और सुनामियों का इतिहास उन्ही लोगों ने रचा है, जिनके इरादे मजबूत हों।'

इसी क्रम में साध्वी प्रांशुप्रभाजी एवं साध्वी प्राज्ञप्रभाजी ने 'सफलताओं की भरें उड़ान' को समवेत स्वर में मधुरम्मय स्वर लहरी से किशोरों को प्रेरणा दी। साध्वी प्रांशुप्रभाजी ने अपने व्यक्तव्य में किशोरों को सफलता के सूत्र बताकर सफल जीने की सलाह दी। मुख्य वक्ता गजराज बेताला ने इसी श्रृंखला में मार्गदर्शन प्रदान किया। मुख्य अथिति भंवरलाल टाक ने प्रस्तुति के क्रम में किशोरों को विभिन्न संवेगों की बात प्रस्तुत की। इसी कड़ी में विभिन्न वक्ताओं ने विविध शैली में मुक्तक, कविता व व्यक्तवय में प्रदीप बैद, विनीत भंडारी ने प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में सैंकड़ों श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ किशोर मंडल संयोजक प्रदीप बैद ने किया।

भक्तामर स्तोत्र जप अनुष्ठान

शाहदरा, दिल्ली

साध्वीश्री अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् दिल्ली के तत्वावधान में ओसवाल भवन के सुरम्य प्रांगण में विघ्नहर्ता, मंगलकर्ता, सकल समस्या समाधायक भक्तामर स्तोत्र जप अनुष्ठान का संघ प्रभावक कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें लगभग ३०० से अधिक दंपति जोड़ों एवं सैंकड़ों एकल भाई-बहिनों ने अपनी संभागिता दर्ज कराई। शाहदरा तेरापंथी सभा द्वारा इस अवसर पर सामूहिक आयंबिल अनुष्ठान रखा गया, जिसमें लगभग ३०० भाई-बहनों ने आयंबिल कर जप अनुष्ठान को प्राणवत्ता प्रदान की।

साध्वीश्री अणिमाश्रीजी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा- 'भक्तामर स्तोत्र आचार्य मानतुंग की वह चमत्कारिक रचना है, जिसकी रचना उन्होंने जेल की कालकोठरी में बैठकर श्रद्धा और भक्ति से की और इस घटना से जिनशासन की अतिशय प्रभावना हुई। यह स्तोत्र श्रद्धा व भक्ति का वह उत्कृष्ट रसायन है, जिसके सेवन मात्र से शरीर के रोम-रोम में नई स्फूर्ति का संचरण होता है। भक्तामर स्तोत्र ऊर्जा का अक्षय स्रोत है, इसकी साधना करने वाला कण-कण में ऊर्जा की अनुभूति करता है। भगवान आदिनाथ की यह स्तुति विघ्न विनाशक, मंगलकारक एवं आनंदप्रदायी है। सभी भक्तामर स्तोत्र को कंठस्थ करने का प्रयास करें एवं इसकी साधना कर अपनी अध्यात्म आभा को बढ़ाएं।'

साध्वीश्रीजी ने सघन प्राण ऊर्जा के साथ रिद्धि मंत्र एवं बीज मंत्र के साथ भक्तामर स्तोत्र का अनुष्ठान करवाकर पूरे वातावरण को सचेतनता प्रदान की। जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा-शाहदरा, तेरापंथ युवक परिषद्-दिल्ली एवं ओसवाल समाज के पदाधिकारियों तथा टीम ने अच्छा एवं सार्थक श्रम किया।

डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी ने मंच संचालन करते हुए अनुष्ठान की महत्ता को व्याख्यायित किया। साध्वी कर्णिकाश्रीजी ने ऋषभाय नमः के जप की तरंगों से पूरे वातावरण को तरंगित कर दिया।

तेरापंथ युवक परिषद् अध्यक्ष विकास चोरड़िया, मंत्री अमित डूंगरवाल एवं किशोर मण्डल सदस्यों आदि ने कार्यक्रम के आरंभ में ऋषभ स्तुति से मंगल संगान किया। शाहदरा तेरापंथी सभा अध्यक्ष पन्नालाल बैद, मंत्री सुरेश सेठिया, ओसवाल समाज अध्यक्ष आनंद बुच्चा, मंत्री राजेंद्र सिंघी, तेयुप क्षेत्रीय संयोजकों पवन पारख़, पवन बैद ने साध्वीश्रीजी के प्रति कृतज्ञता के भाव व्यक्त किये। तेयुप उपाध्यक्ष राकेश बैंगाणी ने आभार ज्ञापन किया।

मासखमण पर तप अभिनंदन का कार्यक्रम

पेटलावद

मुनि मुनिसुव्रतकुमारजी के पावन सान्निध्य में खुशबु अनिल मेहता के मासखमण पर तप अभिनंदन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा कि तपस्या करने वालो को महान त्यागी आचार्यों व तपस्वी साधु-साध्वियों की शक्ति मिलती है। तपस्या से पुराने संचित कर्म कटते हैं। तपस्या के साथ क्षमा का भाव रहना बहुत बड़ी साधना है। मुनिश्री ने प्रसंगवश तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास का उल्लेख करते हुए कहा कि मनोहरीदेवी आंचलिया ने अपने जीवनकाल मे ३१ मासखमण किए। तपस्या करना सामान्य नहीं वरन बहुत बड़ी बात है। मुनिश्री ने तप अनुमोदना में स्वरचित गीत का संगान किया।

मुनि मंगलप्रकाशजी ने तपस्या के प्रति मंगलकामनाएं व्यक्त करते हुए भविष्य में अधिक बड़ी तपस्या करने की शुभाशंसा व्यक्त की। मुनि शुभमकुमारजी ने भी धर्मसभा को सम्बोधित किया।

कार्यक्रम में तेरापंथी सभा के अध्यक्ष मनोज गादिया ने तप अनुमोदना में अपने भाव व्यक्त किए। तेरापंथी सभा रायपुरिया अध्यक्ष प्रकाश कोटड़िया ने श्रद्धेय साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के संदेश का वाचन करते हुए रायपुरिया समाज की ओर से तप अभिनंदन में अपने भाव व्यक्त किए। तेरापंथ महिला मंडल पेटलावद एवं रायपुरिया, मेहता परिवार से संबद्ध महिलाओं ने गीतिका प्रस्तुत की। तेरापंथी सभा पेटलावद व रायपुरिया की ओर से तपस्वी को अभिनंदन पत्र व साहित्य भेट किया गया।

उड़ान ज्ञान गगन में कार्यशाला

नंदनवन, मुंबई

तेरापंथ महिला मंडल मुंबई द्वारा आयोजित उड़ान ज्ञान गगन में कार्यशाला तेरापंथ एकादशम् अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी की प्रेरणा से नंदनवन में आयोजित हुई। मुख्य वक्ता साध्वी सिद्धार्थप्रभाजी ने नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला की शुरुआत की। साध्वीश्रीजी ने विषय 'पल-पल उत्सव बन जाए' को प्रतिपादित करते हुए कहा- उत्सव अर्थात सेलिब्रेशन। उन्होंने बताया कि तीर्थंकर के कल्याणक महोत्सव- जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान और निर्वाण, जैन दर्शन के अनुसार यह पांच क्षण ऐसे हैं, जिनमें समूची सृष्टि आनंद का अनुभव करती हैं। सात बिन्दुओं को अपना कर जीवन के हर पल का उत्सव मना सकते हैं- १. जिन, २. रत्नत्रयी, ३. स्यादवाद, ४.सृष्टि शाश्वत, ५. कर्म, ६. उत्पाद, व्यय, ध्रोव्य व ७. एक मानवजाति। साध्वीश्रीजी ने बहनों की जिज्ञासाओं का बहुत ही सटीक समाधान दिया। अभातेममं ट्रस्टी प्रकाश तातेड, कार्यसमिति सदस्य एवं मुंबई उपाध्यक्ष तरुणा बोहरा, अलका मेहता, मीना सुराणा, पूर्वाध्यक्ष प्रेमलता सिसोदिया, भाग्यश्री कच्छारा, मुंबई महिला मंडल अध्यक्ष विमला कोठारी, मंत्री संगीता चपलोत, कोषाध्यक्ष सुनीता सुतरिया आदि सहित लगभग ८०० से अधिक बहनों की सराहनीय उपस्थिति रही। अल्का पटावरी व सीमा बाफना का व्यवस्था में सहयोग रहा। ममता कोठारी ने संचालन और आभार ज्ञापन किया।

मूल कारण को खोजे बिना समस्या का कभी समाधान नहीं हो सकता।

-आचार्यश्री महाश्रमण

महासभा द्वारा 'बेटी तेरापंथ की' के प्रथम सम्मेलन का आयोजन

अच्छे धार्मिक संस्कारों को आत्मसात करने का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

१९ अगस्त २०२३,
नन्दनवन-मुम्बई

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने भगवती सूत्र की आगम वाणी को समझाते हुए फरमाया कि श्रमण भगवान महावीर के सान्निध्य में श्रमणोपासिका जयंती स्थित है। पांच इन्द्रियों के विजय में भी जयन्ती ने प्रश्न किये हैं। बोली- भन्ते! श्रोतेन्द्रिय के वशीभूत जीव क्या बन्धन करता है। भगवान ने उत्तर किया कि जयंती! श्रोतेन्द्रिय के प्रति वशीभूत बना जीव आयुष्य कर्म को छोड़कर शेष सात कर्मों की शिथिल प्रवृत्तियों को गाढ़ बंधन प्रवृत्ति में कर लेता है। इस तरह जीव चारों गतियों में संसार परिभ्रमण करता है। इसी तरह से वह जीव अन्य इन्द्रियों से वशीभूत हो कर्मों का गाढ़ बन्धन करता है। भाव इन्द्रियां तो क्षयोपशम भाव है। जीवन की एक उपलब्धि है। परन्तु इन्द्रियों का उपयोग आदमी करता है, राग-द्वेष के वशीभूत हो जाता है, वह प्रवृत्ति पाप कर्म का बन्धन कराने वाली बन सकती है।

यह पांचों इन्द्रियां ज्ञान की साधन है, पर भोग की साधन भी है, पाप कर्म का बन्धन कराने में यह कारण बन सकती है। कान का होना बड़ी है, तो कान सुनने में सक्षम है, तो विशेष बात हो जाती है। तो इन्द्रियों का बढ़िया उपयोग करें। अच्छा सुनें, अच्छा देखें और अच्छा बोलें। आंखें अहिंसा की साधना में उपयोगी है। खाने का संयम हो। स्वाद में आसक्ति न हो। फालतू विवाद भी वाणी से न करें। संवाद करें।

कालूयशोविलास का सुमधुर विवेचन कराते हुए पूज्यवर ने पूज्य कालूगणी के स्वास्थ्य की प्रतिकूलता के समय की गई व्यवस्थाओं को विस्तार से व्याख्यायित किया।

पूज्यवर ने खुशबू चिंडालिया एवं टीना बैंगानी ने ५० की तपस्या एवं सज्जन रांका ने ६३वीं अठाई की तपस्या के प्रत्याख्यान किये। पूज्यवर द्वारा अन्य तपस्याओं के प्रत्याख्यान भी करवाये गये।

परमपूज्य की सन्निधि में एवं जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में 'बेटी तेरापंथ की' का प्रथम सम्मेलन शुरू हुआ। महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'बेटी तेरापंथ की' के संभागियों को पावन प्रतिबोध प्रदान करते हुए कहा कि चौरासी लाख जीव योनियों में मनुष्य जीवन महत्वपूर्ण होता है। अच्छा कुल और अच्छे संस्कार वाले कुल में जन्म लेना और विशेष होता है। आदमी का जीवन शांतिमय, धर्ममय हो। धार्मिक सम्प्रदायों द्वारा अच्छे धार्मिक संस्कार दिये जाते हैं। संस्कार मजबूती के साथ हो तो जीवनभर काम आ सकते हैं। आदमी कहीं भी जाए, अपने संस्कारों की सुवास फैला सकता है।

महासभा द्वारा आयोजित यह सम्मेलन संस्कार और शिक्षा को पुष्ट बनाने वाला है। यह जीवन की महत्त्वपूर्ण निधि हो सकती है। अच्छी बातें कहीं से सुनी जा सकती है। पुरानी स्मृतियों को ताजा करने के साथ-साथ अच्छे धार्मिक संस्कार, अहिंसा, संयम, शांति, समन्वय आदि रहे तो जीवन अपने सुखी रह सकता है। परिवार और बच्चों में अच्छे संस्कार देने का प्रयास होना चाहिए। बेटियों का तो मां-बाप के पास आना ही विशेष बात होती है तो बेटियां और अन्य भी इससे अच्छी प्रेरणा, अच्छे धार्मिक संस्कार आदि को आत्मसात करने का प्रयास करें। धर्म का जीवन में विकास हो। संप्रदाय अलग बात है। सब में अहिंसा-संयम के संस्कार रहे। त्याग-तपस्या जीवन में रहे।

इस सम्मेलन के संदर्भ में 'बेटी तेरापंथ की' की संयोजिका श्रीमती कुमुद कच्छारा ने अपनी अभिव्यक्ति दी। सहसंयोजिका श्रीमती वन्दना बरड़िया से बेटियों से परिसंवाद किया तो बेटियों के भावपूर्ण संवाद से पूरे माहौल को स्नेहिल बना दिया।

महासभा के अध्यक्ष श्री मनसुखलाल सेठिया ने भी इस संदर्भ में अपनी अभिव्यक्ति दी। मुम्बई से संबंधित बेटियों ने गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

सांसारिक चीजों में उलझकर धर्म से विमुख न हो : आचार्यश्री महाश्रमण

१४ अगस्त २०२३
नंदनवन, मुंबई

आगम वाणी का रसास्वाद कराते हुए युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि भगवती सूत्र में बताया गया है- गौतम ने भगवान महावीर से पूछा कि भंते! जागरिका कितने प्रकार की होती है। भगवान महावीर ने उतर दिया कि सोना और जागना हमारे जीवन में चलते हैं। यह बाहर से संबंधित है, तो भीतर से भी संबधित है। भीतर से जो संबंधित है, वह निद्रा प्रमाद, मुर्छा और अज्ञान के रूप में है, वह भीतरी सुसुप्ति है। जहां ज्ञान, साधना है, वह जागरिका होती है। आदमी बाहर से सोता हुआ भी भीतर से जागता हुआ हो सकता है। अमुनि सोये रहते हैं, मुनि जागते रहते हैं।

जागरिका के तीन प्रकार बताये गये हैं- बुद्ध जागरिका, अबुद्ध जागरिका और अदृष्टा जागरिका। जो केवल ज्ञानी है, जो अर्हत भगवान है, जिन्हें केवल ज्ञान, केवल दर्शन प्राप्त हो गया, जिन है, अतीत वर्तमान व भविष्य को जानने वाले सर्वज्ञ हैं, सर्वदर्शी हैं, वे बुद्ध हैं। इनकी जागरिका बुद्ध जागरिका है।

हमारी जागरिका में एक बाधक तत्व है- मोहनीय कर्म। मोहनीय कर्म का परिवार अनेक सदस्यों वाला है। दर्शन मोहनीय और चारित्र मोहनीय इन दो में सारे उपभेद समाविष्ट हो जाते हैं। केवलज्ञान वही प्राप्त कर सकता है, जिसके मोहनीय कर्म क्षीण हो गये हैं। सर्वज्ञ सतत् जागरूक रहते हैं, उन्हें कभी नींद नहीं आती है। उनकी यह जागरिका अध्यात्म परायणता है।

जो जानकार नहीं है, वह अबुद्ध है। यहां बताया गया है जो साधु अणगार है, उनकी जागरिका अबुद्ध जागरिका है। वे अभी तक केवल ज्ञानी बुद्ध नहीं बने हैं। केवल ज्ञान के सिवाय अन्य ज्ञान उनमें हो सकते है पर जब तक केवल ज्ञान नहीं होता है, उनमें अबुद्ध जागरिका होती है।

जो श्रमणोपासक श्रावक होते हैं, जीव-अजीव आदि को जानते हैं और अपने श्रावक धर्म, तप कर्म की आराधना करने वाले होते हैं, उनमें भी अध्यात्म की जागरणा है। उनमें सम्यक् दर्शन है, कुछ व्रत त्याग है। इस जागरिका का नाम है- सुदृष्टा जागरिका। श्रावक तत्वविद् भी होता है। श्रावक अपनी सुदृष्टा जागरिका को अच्छी बनाये रखे। साधना के साथ व्यवहार में भी ईमानदारी रहे।

आदमी की धर्म के प्रति उच्च कोटि की श्रद्धा हो। धर्म ही जीवन की आत्मा है। सांसारिक चीजों में उलझकर धर्म से विमुख न हो। अर्हनक जैसे श्रावक हों। प्राण जाए तो जाए पर धर्म को नहीं छोड़ा। धर्म न वह वस्त्र है, जो ओढ़ा-उतारा जा सके। भीतर की धर्मनिष्ठा हो। प्रतिकूल स्थिति में भी हमें धर्म के प्रति जो आस्था है, उसे नहीं छोड़ना चाहिये। कठिनाईयां जीवन में आ सकती है।

धर्म से जो मिलता है, वह पैसे से नहीं मिल सकता है। परीक्षा हो सकती है, उसमें हम फेल न होकर पास हों। श्रावकों को अपनी जागरिका बनाये रखना चाहिये। साधु और श्रावक दोनों की धर्म के प्रति आस्था बनी रहे।

पूज्यवर ने कालूयशोविलास के अंतर्गत विस्तृत रूप से समझाया कि किस तरह पूज्य कालूगणी ने इतनी वेदना में भी भीलवाड़ा से गंगापुर के लिए विहार कर अपने दिये गये वचन को निभाया। पूज्यवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाये।

महासभा द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन के अंतर्गत मंचीय मंचीय कार्यक्रम में परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने समागत प्रतिनिधियो को संबोध प्रदान करवाया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

तात्कालिक प्रतिक्रिया की परवाह मत करो, दीर्घकालिक निष्पत्ति पर अधिक ध्यान दो।

-आचार्यश्री महाश्रमण

एकव्रती-श्रमणोपासक होना, विशेष व्यक्ति की पहचान : आचार्यश्री महाश्रमण

१३ अगस्त २०२३

नन्दनवन-मुम्बई

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में शिष्य गौतम ने भगवान महावीर से पूछा- भन्ते! एक श्रमणोपासक है, उसका नाम है- ऋषिभद्र पुत्र। वह कभी मुंड होकर, गृहस्थ को छोड़कर अणगार बनेगा क्या?

आगमों के आधार पर कहा जा सकता है कि गौतम स्वामी आदर्श प्रश्नकर्ता थे। वे बार-बार भगवान से प्रश्न कर लिया करते थे। वे भगवान के अन्तेवासी निकट के शिष्य थे। भगवान महावीर ने उत्तर देते हुए फरमाया कि ऋषिभद्र पुत्र के बारे में यह संभव नहीं है, वह मेरे पास दीक्षा तो नहीं लेगा पर वह श्रावक बनेगा। शीलव्रत गुण विरमण प्रत्याख्यान, पौषधोपवास और तपःकर्म द्वारा आत्मा को भावित करता हुआ वह बहुत वर्षों तक श्रमणोपासक पर्याय का पालन करेगा।

गृहस्थ तो संसार में बहुत है, पर एकव्रती-श्रमणोपासक होना, वह मानो विशेष व्यक्ति की पहचान होती है। बाद में वह श्रमणोपासक एक महीने की संलेखना से अपने शरीर को कृश बनाकर अनशन के साथ आलोचना-प्रतिक्रमण कर समाधिपूर्ण काल में कालधर्म को प्राप्त कर सौधर्म कल्प में उत्पन्न होगा। प्रथम देवलोक अरुणाभ विमान में उत्पन्न होकर चार पल्योपम की आयु वाला देव बनेगा। बाद में वह देवलोक का आयुष्य पूर्ण कर महाविदेह क्षेत्र में उत्पन्न हो सिद्ध हो जायेगा।

इस प्रसंग से हम यह जान सकते हैं कि श्रावकपन सामान्य जीवन नहीं है। श्रमणोपासक साधुओं के आस-पास रहने वाला, साधुओं का सत्संग करने वाला होता है। कुछ देर का सत्संग भी कल्याण में सहायक बन सकता है। संगति का भी जीवन पर प्रभाव पड़ सकता है। अच्छे लोगों के पास रहने पर अच्छी बातें ग्रहण की जा सकती है। सत्संगत के दो साधन हैं- कान और आंख। अच्छी वाणी सुनना और अच्छी बात को देखना। अच्छी बात बोलने से अच्छी बात दूसरों को सुनने को मिल सकती है।

प्रवचन में तीन बातों का समन्वय होता है- अच्छा सुनना, अच्छा देखना और अच्छा बोलना। तीर्थंकरों की देशना से कितने लोगों का कल्याण होता है। इसी कारण गौतम स्वामी जानते हुए भी भगवान से प्रश्न पूछ लेते थे ताकि औरों को भी जानकारी मिले। भगवान द्वारा दिया गया उत्तर प्रामाणिक होता है। आज आगमों से कितना ज्ञान हजारों वर्ष बाद भी हमें प्राप्त हो रहा है।

उत्तरवर्ती आचार्य का कार्य होता है कि उसका पूर्ववर्ती आचार्य के प्रति सम्मान विनय का भाव हो। वह उनके गुणों को औरों को भी बताये। पूर्ववर्ती आचार्यों ने जो शिक्षाएं फरमायी थी, उनको औरों को भी बताये। प्रश्नोत्तर से अनेक जानकारियां हमें प्राप्त हो जाती है। आगमों से पाठक को काफी जानकारी मिल सकती है।

पूज्य गुरुदेव तुलसी के मुख्य संपादकत्व में ३२ आगम मूल पाठ तो आ गये थे। अब हिन्दी और संस्कृत भाषा में संपादन का कार्य चल रहा है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी जैसे सहयोगी मिले। अनेक चारित्रात्माओं का भी सहयोग मिला होगा। श्रावक समाज व संस्थाओं का भी सहयोग रहा था।

पूज्यवर ने प्रेमलता पोखरणा, जगदीश मादरेचा एवं रेखा खांटेड़ तथा अन्य तपस्वियों को तपस्या के प्रत्याख्यान करवाये।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने समागत प्रतिनिधियो को उद्बोधन प्रदान करवाया।

महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया, मुख्य न्यासी सुरेशचंद गोयल एवं महामंत्री विनोद बैद के वक्तव्य हुए।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

भारत देश भौतिक विकास के साथ आध्यात्मिक विकास भी करता रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

१५ अगस्त २०२३

नन्दनवन-मुम्बई

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने भारत के ७७वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर पावन संदेश प्रदान करते हुए फरमाया कि आज स्वतंत्रता दिवस है। भारत एक अच्छा देश है। भारत में अनेक संत, संन्यासी हैं। यहां विभिन्न धर्म ग्रंथों की संपदा है। देश को भौतिक विकास के साथ आध्यात्मिक विकास भी चाहिये। आर्थिक विकास भी चाहिये। नैतिकता की शक्ति भी देश में रहनी चाहिये। सब में सद्भावना रहे। सब में मैत्री भाव रहे। सब शांति से रहे। हम युद्ध से दूर रहें। शुद्ध-बुद्ध रहें।

आज का दिन महत्वपूर्ण दिवस है। सभी में नैतिकता, सद्भावना व नशामुक्ति का विकास होता रहे। भारत सभी क्षेत्रों के साथ आध्यात्मिक-धार्मिक उन्नति करता रहे।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल प्रेरणा प्रदान कराते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में श्रमणोपासकों का भी वर्णन प्राप्त होता है। भगवान महावीर के समय एक श्रमणोपासक शंख था।

शंख ने भगवान महावीर को वन्दन कर प्रश्न किया कि भन्ते! क्रोध में जीव क्या बंध करता है। किसका प्रकर्ष, चय, उपचय करता है। उत्तर दिया गया- क्रोध असातवेदनीय कर्मों का सघन बंध कराने वाला होता है। हम व्यवहार में देखते हैं कि कोई-कोई आदमी बहुत गुस्सा करता है। गुस्सा हमारा शत्रु है। गुस्सा दो तरह का होता है। एक तो आवेश भीतर में उठता है। आवेशवश बोलने वाला गुस्सा महाखराब है। एक गुस्सा मन में नहीं है, थोड़ी कड़ाई दिखाने के लिए थोड़े शब्द बोल देता है। मन में द्वेष भाव नहीं है। गुस्से-गुस्से में अन्तर है।

जो बात कहने की है, वह शांति से भी कही जा सकती है। हमारे में आवेश रूपी गुस्सा न रहे। मौका देखकर डांटना चाहिये। उलाहना भी पात्र को देखकर देना चाहिये। गुस्से में न रूठना चाहिये और न ही बोलना चाहिये।

पूज्यवर ने साधु-साध्वियों को अनेक प्रेरणाएं फरमायी।

चतुर्दशी पर पूज्यवर ने हाजरी का वाचन कराते हुए साधु-साध्वियों को प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप हमारी सम्पादाएं है, इनमें वर्धमानता रहे। पूज्यवर की आज्ञा से छोटी व नवदीक्षित साध्वियों ने लेख पत्र का वाचन किया।

पूज्यवर ने प्रथम बार लेखपत्र का वाचन करने वाली साध्वियों को २१-२१ कल्याणक और दूसरी बार वाचन करने वाली साध्वियों को दो-दो कल्याणक बक्सीस प्रदान किए। चारित्रात्माओं द्वारा सामूहिक रूप से लेखपत्र का वाचन हुआ।

पूज्यवर ने मनीषा चिंडालिया को ३१ की तपस्या, मीना कोठारी को २९ की तपस्या के तथा अन्य तपस्वियों को उनकी तपस्या के प्रत्याख्यान करवाये।

मुनिश्री हेमराजजी की स्मृति सभा

पूज्यवर ने छापर सेवा केन्द्र में गत दिनों दिवंगत मुनिश्री हेमराजजी 'श्रीडूंगरगढ़' के जीवनवृत्त के बारे में फरमाया कि बीदासर वृहद् दीक्षा समारोह में उनकी दीक्षा हुई थी। वे प्रकृति से भद्र थे। गुरु भक्ति भी उनके मुख से मुखरित होती रहती थी। उनकी आत्मा के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना करते हुए पूज्यवर ने चार लोगस्स का ध्यान करवाया।

मुख्य मुनि प्रवर, साध्वीप्रमुखा -श्रीजी, साध्वी निर्वाणश्रीजी, मुनि कोमल- कुमारजी, मुनि जितेन्द्रकुमारजी, मुनि सुधांशु- कुमारजी, मुनि अनेकान्त-कुमारजी ने दिवंगत मुनिश्री हेमराजजी की आत्मा के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना की। मुनिश्री हेमराजजी के संसारपक्षीय परिजन प्रदीप गंग ने भी अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

जीतो एपेक्स के चेयरमैन सुखलाल नाहर ने अपने भाव व्यक्त किये। पूज्यवर ने उन्हें आर्शीवचन प्रदान किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने श्रेष्ठ, उत्तम व विशिष्ट सभाओं के नामों की घोषणा की एवं मोमेंटो प्रदान कर सम्मानित किया।